mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-73 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

17 मार्च 2025 सोमवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

जब वरुण चक्रवर्ती... @ पेज 7

मांस-मछली और शराब जैसी गलत गतिविधियां कर रहे 'गैर-हिंदुओं' पर लगे प्रतिबंध

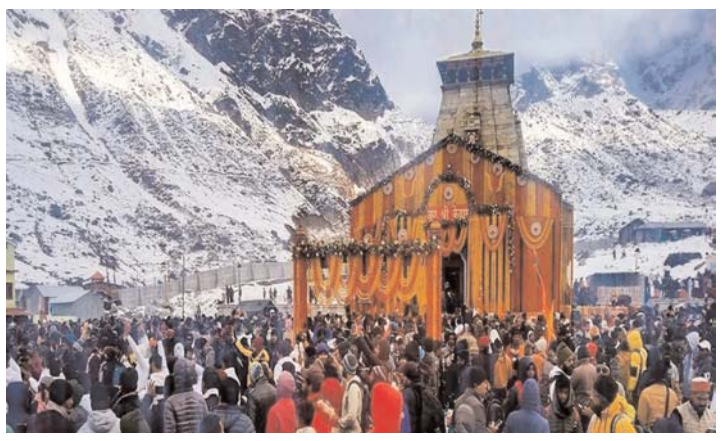

मुंबई (एजेंसी)। उत्तराखंड में 30 अप्रैल से शुरू हो रही चारधाम यात्रा से पहले केदारनाथ विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी की विधायक आशा नौटियाल ने बड़ा ऐलान किया

● **भारतीय जनता पार्टी की विधायक आशा नौटियाल ने किया बड़ा ऐलान**

है। विधायक आशा नौटियाल ने केदारनाथ धाम में मांस-मछली और शराब जैसी गलत गतिविधियां कर रहे 'गैर-हिंदुओं' पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि ऐसे लोग धाम को बदनाम करने का प्रयास कर रहे हैं।

विधायक आशा नौटियाल ने एक वीडियो में कहा कि हाल में यात्रा की तैयारियों को लेकर स्थानीय होटल, ढ़ाबा व्यवसायी और घोड़े-खच्चर रखने वाले लोगों के साथ हुई एक बैठक में यह बात खुलकर सामने आई थी। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों ने यह मुद्दा उठाया था कि गैर-हिंदू लोग वहां मांस, मछली और शराब के व्यापार जैसी गलत गतिविधियां में संलिप्त हैं।

बीजेपी विधायक ने कहा, %जो भी लोग धाम को बदनाम करने का काम करते हैं, उन पर प्रतिबंध लगना ही चाहिए।% नौटियाल ने यह भी कहा कि केदारनाथ और प्रदेश के अन्य धामों के दर्शन के लिए पूरे देश और विश्व से श्रद्धा के साथ लोग आते हैं। इसलिए उनकी आस्था को ठेस नहीं पहुंचनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि एक जनप्रतिनिधि होने के नाते उनका यह कर्तव्य बनता है कि वह स्थानीय लोगों द्वारा उठायी गई मांगों को उचित मंच पर रखें और सुनिश्चित करें कि गलत गतिविधियों पर रोक लगाई जाए। कांग्रेस की उत्तराखंड इकाई ने विधायक के इस बयान की कड़ी भर्त्सना करते हुए कहा कि त्योहारों व धार्मिक यात्राओं के नाम पर नफरत फैलाना बीजेपी का राष्ट्रीय एजेंडा है।

अल्पसंख्यकों को निशाना बना रही बीजेपी: प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सूर्यकांत धस्माना ने कहा, %चाहे महाकुंभ मेला हो या होली और जुमे की नमाज या आगामी चारधाम यात्रा, सभी मौकों पर बीजेपी इनके बहाने अल्पसंख्यक मुस्लिम समाज को निशाना बनाकर देश और प्रदेश का सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने का प्रयास करती है। यह बीजेपी का राष्ट्रीय एजेंडा है।

असली मुद्दों से ध्यान भटका रही बीजेपी-कांग्रेस: उन्होंने कहा कि ऐसा करके सरकार बेरोजगारी, मंहगाई, कानून एवं व्यवस्था जैसे असली मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाना चाहती है। धस्माना ने राज्य सरकार से चारधाम यात्रा निर्विघ्न संपन्न कराने और किसी भी प्रकार की अवांछनीय हरकत करने वाले व्यक्ति, फिर चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या प्रांत का हो, उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई सुनिश्चित करने की मांग की है।

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तान में भीषण ब्लास्ट से 90 सैनिकों की हुई मौत

पाकिस्तान (एजेंसी)। पाकिस्तान में ट्रेन के हाईजैक होने के बाद लगातार आतंकी हमले जारी हैं। रविवार को पाकिस्तान के नोशकी इलाके में भीषण ब्लास्ट की घटना सामने आई जिसमें पाकिस्तानी सुरक्षा बलों के 90 जवानों की मौत होने का दावा किया गया है। यह बड़ा धमाका अशांत दक्षिण-पश्चिमी पाकिस्तान में हुआ, जहां सुरक्षा बलों को ले जा रही एक बस के पास सड़क किनारे भीषण विस्फोट हुआ, विस्फोट इतना जबरदस्त था कि आसपास के इलाके दहल गए।

एपी ने इस धमाके में कम से कम पांच अधिकारियों की मौत होने और 10 अन्य के घायल होने की खबर दी है। बलूच लिबरेशन आर्मी मीडिया हक्कल ने नोशकी में पाकिस्तानी सेना के काफिले पर हुए हमले का वीडियो जारी किया है। बीएलए मजीद ब्रिगेड और स्पेशल यूनिट फतेह स्क्वॉड ने नोशकी में एक घातक हमले में पाकिस्तानी सेना के काफिले को निशाना बनाया। इस हमले में कुल 90 दुश्मन कर्मियों को मार गिराया गया।

ताइवान की सीमा के पास गिरा चीन का लड़ाकू विमान

ताइपे (एजेंसी)। चीन का एक लड़ाकू विमान ताइवान की सीमा के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हालांकि इस दुर्घटना में पायलट की जान बच गई। बताया जा रहा है कि यह विमान प्रशिक्षण उड़ान के दौरान दुर्घटनाग्रस्त का शिकार गया। हालांकि पायलट

पैराशूट के जरिये सुरक्षित बचने में सफल रहा। चीन की सरकारी मीडिया ने यह जानकारी दी। 'शिन्हुआ' समाचार एजेंसी ने अपनी खबर में शनिवार को बताया कि यह दुर्घटना चीन के सुदूर दक्षिणी द्वीप प्रांत हैनान के एक कस्बे के निकट हुई, जहां अनेक वायुसेना और नौसेना अड्डे, रडार स्टेशन और अन्य सैन्य अवसंरचनाएं स्थापित हैं। इस सैन्य अवसंरचना का उद्देश्य विशाल, रणनीतिक दक्षिण चीन सागर पर चीन के दावे को पुष्ट करना है। खबर के अनुसार दुर्घटना के कारण की जांच की जा रही है।

माफ कर दो...गलती हो गई भाई, नासिक में कपल से बदसलूकी

नासिक (एजेंसी)। महाराष्ट्र के नासिक जिले में कपल के साथ बदसलूकी करने वाले आरोपी मजहर खान को जब पुलिस ने कानून का पाठ पढ़ाया, तो वह माफी मांगता नजर आया। आरोपी मजहर खान पुलिस के सामने, %माफ कर दो... भाई माफ कर दो...भाई माफ कर दो... गलती हो गई.. माफ कर दो...% गिड़गिड़ाता रहा। पुलिस ने ऑटो रिक्शा गैंग के सरगना मजहर खान को जेल भेज दिया है। हिरासत में लिए गए शख्स की हेकड़ी 72 घंटे के भीतर ही पुलिस ने निकाल दी। होली के दिन आए इस वीडियो में आरोपी मजहर एक कपल को धमका रहा था। मारपीट भी कर रहा था। फिलहाल आरोपी अब पुलिस की कस्टडी में है। अपनी गलती के लिए माफी मांग रहा है। होली के दिन कपल अपनी कार से जा रहे थे। इसी दौरान इनकी कार की टक्कर ऑटो रिक्शा से हो गई। मामूली बात पर इस ऑटो ड्राइवर ने कार सवार और उनकी पत्नी के साथ न सिर्फ बदसलूकी की थी बल्कि हाथापाई भी की। ऑटो ड्राइवर की हरकत का ये वीडियो वायरल हुआ तो पुलिस ने इसे हवालात पहुंचा दिया। पुलिस ने बताया कि होली के दिन नासिक के शालीमार इलाके में ऑटो ड्राइवर ने अपने साथियों को बुलाकर दंपत्ति के साथ बदसलूकी शुरू की थी। उन्हें धमकाया था। मजहर खान और उसके साथियों ने कार को घेर लिया था। दोनों के साथ धक्का-मुक्की की और गाड़ी के कांच भी तोड़ दिए थे। इस दौरान कार में सवार महिला लगातार माफी मांगती रही लेकिन मजहर खान और उसके साथी नहीं रुके। इस दौरान आसपास खड़े लोग भी मजहर को रोकते रहे लेकिन वो लगातार हाथापाई और गाली देता रहा। कार में सवार शख्स बार बार कहता रहा कि उसे माफ कर दो, उससे गलती हो गई लेकिन ऑटो ड्राइवर ने जरा भी रहम नहीं दिखाया।

भारत-पाक रिश्ते पर पीएम मोदी का बड़ा बयान

उम्मीद जताते हैं कि पाकिस्तान को जल्द से जल्द सद्बुद्धि आएगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा कि भारत की तरफ से शांति के हर प्रयास का जवाब पाकिस्तान ने शत्रुता और विश्वासघात से दिया है। पीएम मोदी ने कहा कि हम उम्मीद जताते हैं कि पाकिस्तान को जल्द से जल्द सद्बुद्धि आएगी और वह शांति का मार्ग अपनाएगा। लेक्स फ्रीडमैन के साथ एक पॉडकास्ट में पीएम मोदी ने कहा, ''मैंने अपने शपथ ग्रहण समारोह में पाकिस्तान को आमंत्रित किया था, लेकिन शांति के हर प्रयास का जवाब शत्रुता और विश्वासघात से मिला। हम पूरी उम्मीद करते हैं कि पाकिस्तान को सद्बुद्धि आएगी और वह शांति का मार्ग अपनाएगा।''

मोदी ने कहा, मेरा मानना है कि पाकिस्तान के लोग भी शांति चाहते हैं क्योंकि वे भी संघर्ष, अशांति और निरंतर आतंक में रहते हुए थक गए होंगे। उस देश को देखिए जहां मासूम बच्चे भी मारे जाते हैं और अनगिनत जिंदगियां बर्बाद हो जाती हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत जब भी शांति की बात करता है। पीएम मोदी ने याद दिलाया कि ओसामा

बिन लादेन ने पाकिस्तान में शरण ली, पाकिस्तान की जड़ में आतंकवाद है। पाकिस्तान ने भारत से संघर्ष का रास्ता चुना है। पीएम मोदी ने कहा कि द्विपक्षीय संबंधों को सुधारने का उनका पहला प्रयास सद्भावना का संकेत था। उन्होंने कहा, ''यह कूटनीतिक कदम था, जो दशकों में नहीं देखा गया। जिन लोगों ने कभी विदेश नीति के प्रति मेरे दृष्टिकोण पर सवाल उठाया था, वे उस समय अचंभित रह गए, जब उन्हें पता चला कि मैंने दक्षेस देशों के सभी राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित किया और हमारे तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने अपने संस्मरण में उस ऐतिहासिक भाव को खूबसूरती से कैद किया है।''

विदेश नीति को लेकर पीएम मोदी ने कहा कि यह इस बात का प्रमाण है कि भारत की विदेश नीति कितनी स्पष्ट और आश्वस्त हो गई है। उन्होंने कहा, ''इसने दुनिया को शांति और सद्भाव के लिए भारत की प्रतिबद्धता के बारे में एक स्पष्ट संदेश भेजा, लेकिन हमें वांछित परिणाम नहीं मिले।''

फ़ब से हेलो नहीं, जय शिवराय कहो..

महाराष्ट्र (एजेंसी)। महाराष्ट्र में पिछले कुछ दिनों से मुगल शासक औरंगजेब की कब्र पर विवाद छिड़ा है। इस बीच, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) ने अपनी पार्टी के सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं के लिए आदेश जारी किया है।

पार्टी के उपाध्यक्ष शशिकांत शिंदे ने सांगली में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान घोषणा की कि एनसीपी-एसपी की ओर से आदेश दिया गया है कि पार्टी के नेता और कार्यकर्ता फोन पर बातचीत करें, तो हेलो के बजाय जय शिवराय के उद्घोष से बातचीत की शुरुआत करेंगे। शिशिकांत शिंदे ने कहा, क्योंकि हम सभी शिवाजी महाराज के मावले (सैनिक) हैं। वहीं, महाराष्ट्र में छत्रपति संभाजीनगर जिले के खुल्दाबाद में मुगल बादशाह औरंगजेब की कब्र के मुद्दे पर सत्तारूढ़ शिवसेना और उद्धव ठाकरे की अगुवाई वाले शिवसेना गुट के नेताओं के बीच शनिवार को जुबानी जंग हुई। महाराष्ट्र विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष अंबादास दानवे ने कहा कि कब्र की मौजूदगी इस बात की याद दिलाती है कि मुगल बादशाह को पराजित कर यहीं दफनाया गया था। उन्होंने कहा, ÷हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को यह बताने में सक्षम होना चाहिए कि औरंगजेब यहां आए थे और इसी भूमि पर उन्हें दफनाया गया था।÷ दानवे ने कहा कि कब्र को हटाने का आह्वान इस इतिहास को समाप्त करने की साजिश है।

अगर बच्चे अपने माता-पिता को अस्पताल में छोड़ते हैं तो उन्हें ना दी जाए पैरेंट्स की संपत्ति

कर्नाटक के मंत्री शरण प्रकाश पाटिल का बड़ा बयान

मुंबई (एजेंसी)। कर्नाटक के मंत्री शरण प्रकाश पाटिल ने रविवार को कहा कि अगर बच्चों ने अपने बुजुर्ग माता-पिता को अस्पतालों में छोड़ दिया है, तो उनकी संपत्ति का हस्तांतरण और वसीयत रद्द कर दी जानी चाहिए। मंत्री ने कहा कि यह समस्या तब सामने आती है जब बुजुर्ग अपनी संपत्ति बच्चों के नाम पर कर देते हैं, और फिर बच्चे उन्हें अस्पतालों में छोड़कर चले जाते हैं।

अधिकारियों के अनुसार, एक गंभीर और अमानवीय घटना सामने आई है, जिसमें कई बुजुर्ग माता-पिताओं को उनके बच्चे सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पतालों में छोड़ आते हैं। यह अक्सर तब होता है जब बुजुर्ग अपनी संपत्ति बच्चों के नाम कर देते हैं।

मंत्री कार्यालय के एक बयान के अनुसार, बेलगावी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में अकेले 150 से ज्यादा बुजुर्गों को छोड़ने के मामले सामने आए हैं, जबकि राज्य के अन्य मेडिकल संस्थानों में 100 से ज्यादा ऐसे ही मामले देखने को मिले हैं। हाल ही में हुई समीक्षा बैठक में बीआईएमएस के निदेशक ने चिकित्सा शिक्षा एवं कौशल विकास मंत्री शरण प्रकाश पाटिल के समक्ष यह मुद्दा उठाया। इस पर मंत्री ने गहरी चिंता व्यक्त की और कहा कि इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

वसीयत को रद्द किया जाए: उन्होंने चिकित्सा शिक्षा निदेशक डॉ. बी.एल. सुजाता राठौड को निर्देश दिया कि वे सभी अस्पतालों और मेडिकल संस्थानों के प्रमुखों को इस बारे में सूचित करें और बच्चों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए सहायक आयुक्तों (राजस्व उप-विभाग) के पास शिकायतें दर्ज कराएं। उन्होंने कहा कि जिन बुजुर्ग माता-पिता ने अपनी संपत्ति या वसीयत अपने बच्चों के नाम पर कर दी है और फिर उन्हें अस्पतालों में छोड़ दिया गया है, उन संपत्तियों और वसीयत को रद्द किया जाना चाहिए।

बिहार की बेटी को मिला सरकार का साथ

खुशबू का सपना पूरा कराएंगे धर्मेंद्र प्रधान

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने अप्रत्याशित कदम उठाते हुए रविवार को बिहार की 11वीं कक्षा की छात्रा खुशबू को फोन कर उसे विज्ञान संकाय में प्रवेश दिलाने का भरोसा दिया। यह कॉल ऐसे समय में आया है जब कुछ दिन पहले ही यह खबर आई थी कि कैसे उसके माता-पिता ने उसे विज्ञान के बजाय कला संकाय में प्रवेश लेने के लिए मजबूर किया,जबकि उसके भाइयों को विज्ञान विषय की पढ़ाई करने की अनुमति दी थी।

अपनी पसंद का विषय पढ़ने का मिलेगा मौका: केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने खुशबू को बताया कि उन्होंने विज्ञान संकाय में उसके प्रवेश के लिए संबंधित जिलाधिकारी से बात की है। प्रधान ने खुशबू से फोन पर कहा,''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार यह सुनिश्चित करेंगे कि आपको अपनी पसंद के विषय पढ़ने को मिले। मैंने पहले ही जिलाधिकारी से बात कर ली है। वह आपके दाखिले में मदद करेंगे। नीट की तैयारी शुरू करें और डॉक्टर बनने का अपना सपना पूरा करें।'' खुशबू इस

सप्ताह के शुरू में एक इंटरव्यू के दौरान रो पड़ी थीं।

खुशबू ने भेदभाव की कही थी बात : छात्रा ने बताया था कि उसके माता-पिता विज्ञान विषय में प्रवेश लेने से रोक दिया है क्योंकि कक्षा 10 में उसे 500 में से 399 अंक मिले थे, जबकि माता-पिता चाहते थे कि 400 अंक प्राप्त हों। खुशबू ने कहा, ''यहां काफी पक्षपात है। मेरे भाइयों को विज्ञान पढ़ने का मौका मिलता है, लेकिन मुझे यह मौका नहीं दिया जाता, क्योंकि मेरे एक अंक कम आए हैं।''

सरकार को लगभग 400 करोड़ रुपये का टैक्स चुकाया

राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने पिछले पांच वर्षों में टैक्स चुकाने का सामने आया आंकड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अयोध्या- भागवान राम की जन्मभूमि अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही यहां तीर्थयात्रियों की संख्या काफी बढ़ रही है। वहीं श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को मिलने वाले दान में भी इजाफा हो रहा है। इस बीच के श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट सचिव चंपत राय ने रविवार को कहा कि ट्रस्ट ने धार्मिक पर्यटन में उछाल के बीच पिछले पांच वर्षों में सरकार को लगभग 400 करोड़ रुपये का टैक्स चुकाया है।

उन्होंने कहा कि यह राशि पांच फरवरी, 2020 से पांच फरवरी, 2025 के बीच चुकाई गई। इसमें से 270 करोड़ रुपये जीएसटी के रूप में भुगतान किए गए, जबकि शेष 130 करोड़ रुपये अन्य विभिन्न टैक्स श्रेणियों के तहत भुगतान किए गए। उन्होंने कहा कि अयोध्या में श्रद्धालुओं और पर्यटकों की संख्या में 10

गुना वृद्धि हुई है, जिससे यह एक प्रमुख धार्मिक पर्यटन केंद्र बन गया है और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं।

उन्होंने कहा कि महाकुंभ के दौरान 1. 26 करोड़ श्रद्धालु अयोध्या आए थे। राय ने कहा कि ट्रस्ट के वित्तीय रिकार्ड का नियमित रूप से नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) के अधिकारियों द्वारा ऑडिट किया जाता है।

उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) प्रशांत कुमार ने रविवार को राम मंदिर का दौरा किया और रामनवमी उत्सव से पहले सुरक्षा तैयारियों की समीक्षा की। राम नवमी पर्व की शुरुआत 30 मार्च को नवरात्र के पहले दिन से होगी और इस मौके पर अयोध्या में 50 लाख से ज्यादा श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है। प्रशांत कुमार ने अपने दौरे के दौरान रामलला और हनुमानगढ़ी में पूजा की और मंदिर निर्माण कार्य का निरीक्षण किया।

उन्होंने स्थानीय अधिकारियों के साथ श्रद्धालुओं के लिए की गई व्यवस्थाओं की भी समीक्षा की। पुलिस महानिदेशक को तीर्थयात्रियों के लिए विकसित की जा रही सुविधाओं के बारे में जानकारी दी गयी और उन्होंने मंदिर परिसर व उसके आसपास लगाए गए सीसीटीवी निगरानी प्रणाली का निरीक्षण किया। शीर्ष अधिकारी ने श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को संभालने के लिए बनाई जा रही सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन योजनाओं की भी समीक्षा की। प्रशासन ने भारी भीड़ की उम्मीद के मद्देनजर हाई अलर्ट जारी किया है और रामनवमी समारोह के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक तैयारियां जारी हैं।

ताजमहल घूम रहे पर्यटकों पर मधुमक्खियों के हमले से मची भगदड़

आगरा (एजेंसी)। आगरा में रविवार को ताजमहल के रॉयल गेट पर मधुमक्खी का छत्ता टूटने से पर्यटकों में भगदड़ मच गई। मधुमक्खियों ने पर्यटकों पर अटैक कर दिया। इससे भगदड़ मच गई। कई पर्यटकों को मधुमक्खियों ने काट लिया। बताया गया है कि ताजमहल के रॉयल गेट पर मधुमक्खी का छत्ता बना हुआ था। छत्ते को हटाने के लिए एएसआई द्वारा काम कराया जा रहा था। एक कर्मचारी छत्ते को हटा रहा था। इसके लिए कोई एहतियात नहीं बरती जा रही थी। छत्ता हटाते ही मधुक्खियां उड़ने लगी। रायल गेट के पास बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक थे। ऐसे में मधुमक्खियों के कटाने पर भगदड़ मच गई। पर्यटक बचने के लिए इधर-उधर दौड़ने लगे। इसी दौरान वहां मौजूद किसी पर्यटक ने मधुमक्खियों के हमले की वीडियो बना ली।

मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मंत्री यादव के पिता के निधन पर दी श्रद्धांजलि

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार सुबह केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेंद्र यादव के गुरुग्राम, जमालपुर पहुंचकर उनके पिता श्री कदम सिंह के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की। उन्होंने स्व. यादव के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शोक संतप्त परिवार को ढांढस बंधाया और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने भी श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल अहमदाबाद में मेगा ब्राह्मण बिजनेस समिट-4 में हुए शामिल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल अहमदाबाद में आयोजित मेगा ब्राह्मण बिजनेस समिट-4 में शामिल हुए। समिट में उन्होंने समाज के प्रबुद्ध जनों से संवाद किया और ब्राह्मण समाज के आर्थिक, शैक्षणिक और व्यावसायिक उत्थान पर अपने विचार रखे। समिट में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय मंत्री श्री सी.आर. पाटिल, पूर्व राज्यपाल श्री कलराज मिश्र, पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री नितिन पटेल, राज्यसभा सांसद श्री मयंक नायक सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। तीन दिवसीय आयोजन में ब्राह्मण उद्योगपतियों के 300 से अधिक स्टॉल लगाए गए हैं, जहां व्यवसाय और स्टार्ट-अप को बढ़ावा देने की दिशा में मार्गदर्शन दिया जा रहा है। राज्य एवं केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी समाज तक पहुंचाने, नए उद्यमियों को प्रोत्साहित करने और बी-2-बी एवं बी-2-सी बैठकों के माध्यम से व्यापार को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं। समिट में समाज के प्रतिभाशाली व्यक्तियों को ब्रह्म रत्न सम्मान प्रदान किया गया। युवक-युवतियों को अधिक से अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिये रोजगार मेले का आयोजन किया गया। समिट में देशभर से 2 लाख से अधिक ब्राह्मण समाज के लोगों ने सहभागिता की। तीन दिवसीय कार्यक्रम में धार्मिक अनुष्ठान, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सामूहिक विवाह मेलों का भी आयोजन किया गया।

मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से की टीकाकरण अभियान में सहयोग की अपील

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्वस्थ बचपन, सशक्त भविष्य का आधार है। टीकाकरण बच्चों को गंभीर बीमारियों से बचाकर उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) को मजबूत बनाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस पर बच्चों को गंभीर बीमारियों से बचाने के लिए प्रदेशवासियों से टीकाकरण अभियान को सफल बनाने में सक्रिय भागीदारी निभाने की अपील की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस पर उत्तम स्वास्थ्य और स्वस्थ भारत के लिए टीकाकरण के शत-प्रतिशत लक्ष्य की पूर्ति के लिए सहभागिता करने का संकल्प लेने का आव्हान किया है।

मुख्यमंत्री ने पुलिस टीम पर हमले में एएसआई के शहीद होने पर दुःख व्यक्त किया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मऊगंज जिले में शाहपुर थाना क्षेत्र के गड़रा गांव में दो गुटों के आपसी विवाद की सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस टीम पर हमले में पुलिस के एएसआई के शहीद होने पर दुःख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि राज्य सरकार की शोक संवेदनाएं शोककुल परिजनों के साथ हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने डीजी पुलिस को मौके पर पहुंचकर पर्यवेक्षण के लिए निर्देशित किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अमानवीय एवं दुर्भाग्यपूर्ण घटना के सभी आरोपियों पर सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। घटना में घायल अन्य पुलिसकर्मियों को उपचार के लिए रीवा चिकित्सालय भेजा गया है। मऊगंज जिले में शाहपुरा थाना अंतर्गत गड़रा गावं में दो गुटों के आपसी विवाद की सूचना पर पहुंचे शनिवार को क्षेत्रीय तहसीलदार,थाना प्रभारी सहित पुलिस की टीम पर हुए दुर्भाग्यपूर्ण हमले में पुलिस के एएसआई श्री रामचरण गौतम की जवाबी कार्रवाई में मृत्यु हो गई। घटना के तुरंत बाद क्षेत्र में धारा 163 लागू कर डीआईजी रीवा, एसपी मऊगंज सहित अन्य पुलिस अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित किया।

महिलाओं के सशक्तिकरण और सम्मान के लिए शासन की योजनाएं संचालित-मंत्री पटेल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास एवं श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने शनिवार को खण्डवा की ग्राम पंचायत नर्मदानगर में मां रेवा उद्यान का लोकार्पण किया। उन्होंने मां नर्मदा की पूजा अर्चना कर चित्र पर माल्यार्पण भी किया। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि आवास योजना के तहत जरूरतमंदों की मदद करना सरकार का मूलभूत कर्तव्य है। प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण में राज्य में सर्वे किया गया था, जिसमें पूर्व में लगभग 27 लाख हितग्राहियों के नाम जोड़े गए थे। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि योजना के लिए तीन माह पहले फिर से सर्वे शुरू किया गया है, जिसमें पात्र हितग्राही नाम जुड़वा सकते हैं। उन्होंने कहा कि योजना के लिए पात्र हितग्राही का नाम छूटने नहीं दिया जाएगा। सर्वे पूरा होने के बाद पात्र हितग्राहियों को पक्का आवास देने की कार्रवाई की जाएगी। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में नागरिकों को मूलभूत सुविधाएँ जैसे मकान, पानी, बिजली और गैस कनेक्शन उपलब्ध कराने के लिए शासन की कई योजनाएं संचालित हैं। उन्होंने कहा कि ये योजनाएं महिलाओं के सम्मान व सशक्तिकरण की ओर अहम पहल हैं। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि गैस कनेक्शन भी महिलाओं के नाम पर ही दिया जा रहा है। वृद्धजनों के जीवन की भी चिंता सरकार कर रही है। कार्यक्रम से पहले मंत्री श्री पटेल ने ग्राम पंचायत नर्मदानगर परिसर में पौधरोपण कर त्रिवेणी, नीम, पीपल एवं बड़के पौधे लगाए। कार्यक्रम में सांसद श्री ज्ञानेश्वर पाटिल, खंडवा विधायक श्रीमती कंचन तनवे, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती पिंकी वानखेडे, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. नागार्जुन बी. गौड़ा सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

सेना में भर्ती के लिए आनलाईन पंजीकरण की प्रकिया प्रारंभ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सेना भर्ती कार्यालय भोपाल द्वारा बताया गया कि भोपाल, बैतूल, छिंदवाड़ा, नर्मदापुरम, हरदा, राजगढ़, रायसेन, सीहोर, विदिशा, गुना, अशोकनगर, पन्ना, दमोह, नरसिंहपुर और पांढुर्णा के उम्मीदवारों को सूचित किया है कि सेना में भर्ती के लिए आनलाईन पंजीकरण की प्रकिया 12 मार्च से शुरू हो गई है जो 10 अप्रैल 2025 तक जारी रहेगी।

उन्होंने बताया कि आवेदन अग्निवीर (पुरुष) की जनरल तकनीकी, क्लर्क एवं अग्निवीर ट्रेड्समैन 8वीं पास, ट्रेड्समैन, 10वीं पास, अग्निवीर महिला (सेना पुलिस), नर्सिंग असिस्टेंट, नर्सिंग असिस्टेंट वेट, सिपाही फार्मा, हवलदार एजुकेसन, धर्मगुरू, केटरिंग जेसीओ, हवलदार सर्वेयर आटोमेटेड कार्टोग्राफर के पदों के लिए जारी किया गया है। आनलाईन परीक्षा जून के महीने में होने कि संभावना है।

सेना भर्ती कार्यालय ने बताया गया कि किसी भी स्पष्टीकरण / सहायता के मामले में उम्मीदवार सेना भर्ती कार्यालय, नारियल खेड़ा, भोपाल मे उपस्थित होकर या दूरभाष क्रमांक-0755-2540954, 9039018588 पर संपर्क कर सकते है। उम्मीदवारों को सूचित किया गया कि पंजीकरण के दौरान जो ई-मेल आईडी एंव मोबाइल नम्बर का विवरण दिया है उसे अपने पास एक साल तक सुरक्षित रखे जिससे भर्ती संबधित सूचना आसानी से मिल सके।

बिजली उपभोक्ता सतर्कता एवं अन्य जांच के देयकों का करें ऑनलाइन भुगतान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कंपनी कार्यक्षेत्र के भोपाल, नर्मदापुरम, ग्वालियर एवं चंबल संभाग के अंतर्गत आने वाले 16 जिलों के ऐसे बिजली उपभोक्ता जिन्हें बिजली कंपनी के सतर्कता एवं अन्य जांच दलों ने अनंतिम/अंतिम देयक जारी किये हैं, उनके भुगतान के लिए कंपनी की वेबसाइट पर ऑनलाईन भुगतान की सुविधा उपलब्ध है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने बताया है कि ऐसे व्यक्ति अथवा बिजली उपभोक्ता जिनके परिसर में बिजली के अनधिकृत उपयोग या फिर अन्य किसी भी अनियमितता के चलते बिजली कंपनी के सतर्कता एवं अन्य जांच दलों द्वारा प्रकरण पंजीबद्ध कर उन्हें अनंतिम/अंतिम देयक जारी किया गया है, तो अब उसके भुगतान के लिए कंपनी के जोन/वितरण केन्द्र कार्यालय के साथ-साथ घर बैठे ही कंपनी की बेवसाइट पर भी ऑनलाईन भुगतान कर सकते हैं। कंपनी ने कहा है कि सतर्कता एवं अन?य जांच में कंपनी द्वारा जारी अनंतिम/अंतिम देयक के भुगतान के लिए संबंधित व्यक्ति/ उपभोक?ता कंपनी की वेबसाइट पोर्टल पर दिये गये इस विकल्प पर जाने के बाद ऑनलाइन भुगतान के लिये उपभोक्ता क्रमांक अथवा पंचनामा/पेज क्रमांक में से किसी एक विकल्प का चयन करने पर सतर्कता के अनंतिम/अंतिम बिल की जानकारी प्रदर्शित होगी।

ग्रीष्मकालीन मूंग फसल में कीटनाशक और नीदानाशक का उपयोग कम से कम करें-कृषि मंत्री कंषाना

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने किसानों से अपील की है कि वे ग्रीष्मकालीन मूंग फसल में कीटनाशक एवं नीदानाशक का उपयोग कम से कम करें। कृषि मंत्री श्री कंषाना ने बताया कि मूंग फसल में अत्यधिक रासायनिक दवाओं का दुष्प्रभाव मानव स्वास्थ्य, मृदा स्वास्थ्य, जल एवं पर्यावरण पर सामने आया है। ऐसे में वैज्ञानिकों/विशेषज्ञों की ओर से कई तरह की बीमारियां जन्म लेने की आशंका व्यक्त की गई हैं। उन्होंने कहा कि किसान भाई मूंग फसल की पैदावार के लिए ऐसा चक्र अपनाएं, जिससे ग्रीष्मकालीन मूंग प्राकृतिक रूप से अपने

समय पर पक सके। कृषि मंत्री श्री कंषाना ने कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग पर कहा कि यद्यपि मूंग की पैदावार से प्रदेश में किसानों की आय में वृद्धि हुई है। किसान इसे जल्दी पकाने के लिए कई बार नीदानाशक दवा (पेराक्वाट डायक्लोराइड) का छिड़काव करते हैं। इस दवा के अंश मूंग फसल में कई दिनों तक विद्यमान रहते हैं, जो मानव स्वास्थ्य एवं पशु-पक्षियों के लिए अत्यंत हानिकारक हैं। कृषि मंत्री श्री कंषाना ने बताया कि कृषि एवं स्वास्थ्य विशेषज्ञों, पर्यावरणविद् और कृषि सुधार के क्षेत्र में कार्य कर रहे संगठनों ने अनुसंधान रिपोर्ट के आधार पर मूंग फसल में आवश्यकतानुसार ही कीटनाशकों के उपयोग का सुझाव दिया है। राज्य सरकार जैविक खेती को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रोत्साहित कर रही है एवं किसानों को जैविक खेती के लिए प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। प्रदेश के नर्मदापुरम, हरदा, सीहोर, नरसिंहपुर, बैतूल, जबलपुर, विदिशा, देवास और रायसेन में सहित कई जिलों में ग्रीष्मकालीन मूंग किसानों के लिए तीसरी फसल का अच्छा विकल्प बन चुकी है। वर्तमान में मूंग की फसल 14.39 लाख हेक्टेयर रकबे में लगाई जा रही है और इसका उत्पादन 20.29 लाख मीट्रिक टन है।

सक्षम आंगनवाड़ी एवं मिशन पोषण 2.0 के तहत आंगनवाड़ी कार्यकताओं का होगा प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केन्द्र सरकार के पोषण भी-पढाई भी कार्यक्रम के तहत प्रदेश की समस्त आंगनवाड़ी कार्यकताओं को नेशनल करिकल्म फॉर अर्ली चाईल्डहूड केयर एण्ड एजुकेशन 2024 (आधारशिला) एवं नेशनल फ्रेमवर्क फॉर अर्ली चाईल्डहूड स्टीमूलेशन 2024 (नवचेतना) के अनुसार प्रशिक्षित किया जाएगा। दो चरणों में यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 20 से 22 मार्च 2025 और 24 से 26 मार्च को होगा। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को 3 वर्ष से कम आयु के बच्चों के पालकों को बाल विकास को प्रेरित करने के संबंध में जागरूक करने, पोषण संबंधी गतिविधियों, 3-6 वर्ष के बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा और बच्चों में दिव्यांगता एवं विकास में देरी के संबंध में पालकों को जागरूक करने जैसे विषयों पर प्रशिक्षित किया जाएगा। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिये राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान नई दिल्ली एवं इंदौर द्वारा ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्रशिक्षणों के माध्यम से परियोजना अधिकारियों एवं पर्यवेक्षकों को मास्टर ट्रेनर्स के रूप में तैयार किया गया है। पोषण भी-पढ़ाई भी कार्यक्रम के सफल आयोजन को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से महिला बाल विकास विभाग के संभागीय संयुक्त संचालकों एवं जिला कार्यक्रम अधिकारियों के उन्मुखिकरण के लिये एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन भोपाल के होटल रेडिसन में 18 मार्च को प्रातः 9:30 बजे किया जा रहा है।

पुनः उपयोगी सिद्ध हुई एयर एम्बुलेंस सेवा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल में नागरिकों को उच्च स्तरीय चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने पीएम श्री एयर एम्बुलेंस सेवा से कई जिंदगियों को बचाया जा रहा है। इसी कड़ी में रीवा निवासी-66 वर्षीय रोगी को दिल की गंभीर बीमारी के उपचार के लिए भोपाल से दिल्ली एयरलिफ्ट कर भर्ती करवाया गया। मरीज के आयुष्मान कार्ड धारक होने के कारण यह सुविधा निःशुल्क उपलब्ध कराई गई। मरीज को 9 मार्च को सीने में दर्द और सांस लेने में तकलीफ होने की शिकायत पर भोपाल के निजी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। जांच में महिला में एक्यूट कोरोनरी सिंड्रोम पाया गया था। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी द्वारा जिला प्रशासन और संचालनालय स्वास्थ्य सेवाओं से संपर्क कर एयर एम्बुलेंस की व्यवस्था

कराई गई। साथ ही दिल्ली के चिकित्सकों से समन्वय कर मरीज को शिफ्ट कराया गया। जहां उनका आगे का इलाज चल रहा है। पूरी प्रक्रिया सीएमएचओ भोपाल, जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज हुरमाड़े एवं चिकित्सकों की देखरेख में की गई। मरीज के भोपाल स्थित अस्पताल से डिस्चार्ज से लेकर मरीज के एयर लिफ्ट होने तक पूरे समय स्वास्थ्य विभाग की टीम मौजूद रही। पीएम श्री एयर एम्बुलेंस सेवा से प्रदेश में कहीं भी चिकित्सा आपात स्थिति उत्पन्न होने या चिन्हित विशेष प्रकार की चिकित्सा सुविधा या चिकित्सा विशेषज्ञों की आवश्यकता निर्मित होने पर कठिन भौगोलिक परिस्थिति में प्रदेश के दूरस्थ अंचलों तक पहुंचकर उन्नत आपातकालीन चिकित्सा द्वारा मरीजों की को स्थिर कर उच्च चिकित्सा केन्द्रों तक एयर लिफ्ट किये जाने की सेवा प्रदाय की जाती है। पीएम श्री एयर एम्बुलेंस सेवा सड़कों एवं औद्योगिक स्थलों में होने वाले हादसों, प्राकृतिक आपदा में गंभीर पीड़ित घायल व्यक्ति को त्वरित उपचार के लिये हवाई परिवहन सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। सड़क एवं औद्योगिक दुर्घटना अथवा प्राकृतिक आपदा में पीड़ित को राज्य के अंदर एवं बाहर शासकीय अथवा निजी चिकित्सालय में निःशुल्क परिवहन किया जाता है। आयुष्मान कार्डधारी के उपचार के लिये राज्य के अंदर एवं राज्य के बाहर सभी शासकीय एवं आयुष्मान सम्बद्ध अस्पतालों में उपचार हेतु निःशुल्क परिवहन की व्यवस्था है।

अन्य हितग्राही जो कि आयुष्मान कार्डधारी नहीं हैं, उनके उपचार के लिए राज्य के अंदर स्थित शासकीय अस्पतालों में निःशुल्क परिवहन जबकि राज्य के बाहर के किसी भी अस्पताल में अनुबंधित दर पर सशुल्क परिवहन सेवा उपलब्ध है।

36 जिलों में सीधी भर्ती वालों को कमान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मप्र में 2010 से 2015 बैच तक के 31 आईएएस अधिकारी ऐसे हैं जो कलेक्टर नहीं बन पाए। ये सभी राज्य प्रशासनिक सेवा से प्रमोट होकर आईएएस बने हैं। हाल ही में 2011 बैच की नेहा मारव्या सिंह भी डिंडोरी कलेक्टर बन गईं। सीधी भर्ती में नेहा ही ऐसी अधिकारी बची थीं जिन्हें कलेक्टरी नहीं मिली थी। तब यह बात मुखर हुई कि प्रमोटी आईएएस अफसरों को पूरे अवसर क्यों नहीं दिए जा रहे। हालांकि अब उच्च स्तर से ऐसे अफसरों की सूची मांगी है। मई के बाद संभावित मैदानी फेरबदल में इनको अवसर दिया जा सकता है। इस समय 55 जिलों में से 36 में सीधी भर्ती (आरआर) के आईएएस कलेक्टर हैं। 19 में प्रमोटी आईएएस हैं। राज्य प्रशासनिक सेवा संघ के अध्यक्ष राजेश कुमार गुप्ता कहते हैं कि सिविल सर्विस में

आने वाला व्यक्ति यह उम्मीद करता है कि कम से कम एक बार तो कलेक्टर बने। उत्तर प्रदेश में तो नॉन आईएएस अफसर भी डीएम बनते हैं, जिनकी उम्र 56 साल से अधिक हो चुकी है। ये जरूर है कि किसी जिले में नॉन आईएएस को डीएम बनाया जाता है तो वहां किसी सीधी भर्ती वाले आईएएस अफसर की पोस्टिंग नहीं की जाती। मप्र में भी ऐसा हो सकता है। कई बार अलग-अलग फोरम पर एसोसिएशन यह बात रखता रहा है। वर्तमान में 2010 बैच से लेकर 2015 बैच तक के ही अधिकारी कलेक्टर बने हुए हैं।

2010 बैच 10 महीने बाद सचिव पद पर प्रमोट हो जाएगा। इस बैच में चार प्रमोटी आईएएस हैं जो कलेक्टर नहीं बने। इनमें दिनेश श्रीवास्तव, अशोक चौहान, सपना निगम और चंद्रशेखर वालिंबे हैं। अभी विचार नहीं हुआ तो ये विभागों में ही काम करते दिखाई देंगे। 2011 बैच के आईएएस हरिसिंह मीणा बिना कलेक्टर बने ही जनवरी में रिटायर हो गए।

2010 से 2015 तक के बैच में ज्यादा अधिकारी रहे। इसलिए आरआर वाले प्रमोटी आईएएस अफसरों की तुलना में आगे निकल गए। हाल ही में जब कई जिलों के कलेक्टरों को बदलने की बात चली थी, तब 2013 से लेकर 2015 बैच के प्रमोटी आईएएस अफसरों के नाम पर विचार करने की बात कही गई, लेकिन मौका नहीं मिला । बैच के मुताबिक अधिकारियों की संख्या इस प्रकार है-

एक ही पद पर सालों गुजरे 2014 बैच के आईएएस नियाज अहमद खान को पीडब्ल्यूडी में पांच साल होने जा रहे हैं।

भारती ओगरे को खनिज में चार साल व राजेश ओगरे को सूचना आयोग में साढ़े तीन साल हो गए। प्रीति जैन पांच साल से संभागीय सचिव हैं।

मुंह में कपड़ा ठूंसकर बुजुर्ग को पीटा, मौत

रास्ते के विवाद में 10 लोगों ने की मारपीट, परिजन का प्रदर्शन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले के हड़वडो गांव में रास्ते के विवाद ने रविवार को खूनी रूप ले लिया। दबंगों ने 60 वर्षीय बुजुर्ग परमेश्वर प्रसाद साकेत की पीट-पीटकर हत्या कर दी।

घटना दोपहर करीब 1 बजे की है। आरोपी बाबूलाल साकेत समेत 10 लोग बुजुर्ग को घसीटकर बाबूलाल के घर ले गए। वहां उन्होंने मुंह में कपड़ा ठूंस उनकी बेरहमी से पिटाई की। शोर सुनकर जब ग्रामीण मौके पर पहुंचे, तब तक बुजुर्ग की मौत हो चुकी थी।

कोर्ट के आदेश के बाद भी किया निर्माण: मृतक के बेटे नंदलाल साकेत ने बताया कि उनका रास्ते को लेकर राम मिलन साकेत, लछिमन साकेत और बाबूलाल साकेत से तीन-चार साल से विवाद चल रहा था। कोर्ट से जीतने के बाद भी विपक्षी पक्ष ने रास्ते पर निर्माण शुरू कर दिया था। तहसीलदार के आदेश पर निर्माण गिराया गया।

पुलिस की कार्रवाई से नाराज होकर दिया घटना को अंजाम: रविवार को गांव के प्रवीण सिंह चौहान के उकसाने पर वे फिर निर्माण करने लगे। पीड़ित पक्ष की सूचना पर पुलिस ने सुबह निर्माण कार्य रुकवाया था। इसी बात से नाराज होकर आरोपियों ने वारदात को अंजाम दिया।

परिजनों ने किया अस्पताल के बाहर प्रदर्शन: घटना के बाद गुस्साए परिजनों और ग्रामीणों ने शव को जिला अस्पताल के बाहर रखकर प्रदर्शन किया। कोतवाली थाना प्रभारी पुष्पेंद्र मिश्रा ने मौके पर पहुंचकर परिजनों को समझाया और आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई का आश्वासन दिया।

सिंगरौली-जबलपुर इंटरसिटी एक्सप्रेस पुल पर दो हिस्सों में बंटी

यात्री सुरक्षित, कहा- अचानक तेज झटका लगा और ट्रेन रुक गई

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली से जबलपुर जा रही इंटरसिटी एक्सप्रेस (ट्रेन नंबर 11651) दो हिस्सों में बंट गई। हादसा सुबह 7:40 बजे शहडोल जिले के ब्यौहारी रेलवे स्टेशन से 2 किलोमीटर आगे एक रेलवे पुल पर हुआ।

हादसे के समय ट्रेन के 5-6 डिब्बे इंजन के साथ रहे। थर्ड एसी के बाद के चार डिब्बे पीछे छूट गए। ट्रेन के अलग होते ही चालक दल ने तुरंत ट्रेन रोक दी। यात्रियों को तेज झटका लगा। शुरुआत में यात्रियों को लगा कि किसी ने चेन पुलिंग की है।

यात्री बोले- ऐसा पहली बार देखा: ट्रेन में सवार यात्री प्रिंस साकेत ने बताया कि ब्यौहारी स्टेशन से निकलने के बाद पहले किसी ने चेन पुलिंग की। ट्रेन फिर से चली और एक मिनट बाद ही यह हादसा हुआ।

यात्री अजीत सोनी ने बताया कि उन्होंने ऐसा पहली बार देखा है। अचानक तेज झटका लगा और ट्रेन रुक गई। राहत की बात यह रही कि ट्रेन में सवार सभी यात्री सुरक्षित हैं।

स्टाफ और ट्रेन में मौजूद गार्ड ने मिलकर जोड़े डिब्बे: ट्रेन सिंगरौली से 5:30 सुबह चली थी। हादसा 7:40 के आसपास हुआ। इसके बाद ट्रेन के ही स्टाफ और ट्रेन में मौजूद गार्ड ने मिलकर इंजन वाले हिस्से को रिवर्स कर पीछे किया। और पीछे छूट गए डिब्बों को आपस में जोड़ा जिसमें तकरीबन 30 मिनट का वक्त लगा। आधे घंटे बाद तकरीबन 8:15 पर ट्रेन वापस से रवाना हुई।

अवैध शराब बिक्री रोकने गए सरपंच को पीटा

जैतपुर के रसमोहनी गांव में दो आरोपियों ने की पिटाई, एससी-एसटी एक्ट में केस दर्ज

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले के जैतपुर थाना क्षेत्र के रसमोहनी गांव में अवैध शराब की बिक्री को रोकने गए सरपंच की दो लोगों ने पिटाई कर दी। सरपंच कमलेश सिंह को गांव के लोगों ने रविवार को अवैध शराब बिक्री की सूचना दी थी।

सरपंच जब आरोपियों के पास पहुंचे और उन्हें शराब बेचने से मना किया। तब बुद्ध और लोक नारायण नाम के दो आरोपियों ने उनकी पिटाई कर दी। इस हमले में सरपंच को चोटें आईं।

पीड़ित सरपंच ने थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ गाली-गलौज, मारपीट और एससी-एसटी एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

युवक की पीट-पीटकर हत्या मामले में 3 आरोपी गिरफ्तार, तीन फरार, होली पर पान न मिलने पर की थी मारपीट

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिले में कोतमा में पान न देने को लेकर हुई मारपीट में एक युवक की मौत के मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने रविवार को बताया कि मुख्य आरोपी अमृतलाल प्रजापति (32) और उसके दो साथियों दिलीप प्रजापति (22) और सुनील उर्फ गोलू प्रजापति (22) को छत्तीसगढ़ के गोरेल्ला से पकड़ा गया है। आरोपियों से घटना में इस्तेमाल की गई बाइक और हथियार भी जब्त कर लिए गए हैं।

ये था पूरा मामला: दरअसल, घटना 14 मार्च की शाम 5 बजे की है। बंजारा तिराहे पर गणेश प्रसाद पांडेय के पान ठेले पर अमृतलाल प्रजापति पान लेने आया था।

पान न मिलने पर अमृतलाल ने गाली-गलौज की और धमकी देकर चला गया। कुछ देर बाद वह अपने 5 साथियों के साथ दो बाइक पर लाठी-डंडे लेकर वापस आया। आरोपियों ने गणेश पांडेय और विक्की केवट को बुरी तरह पीटा। घायल विक्की केवट को अस्पताल ले जाया गया, जहां 15 मार्च को शहडोल अस्पताल में उसकी मौत हो गई।

मौत के बाद पीड़ित परिवार ने बंजारा तिराहे पर विरोध प्रदर्शन किया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक इसरार मंसूरी ने मौके पर पहुंचकर दो दिन में आरोपियों की गिरफ्तारी का आश्वासन दिया। पुलिस अधीक्षक मोतीउर्र रहमान के निर्देशन में तीन टीमें बनाई गईं थीं।

ये तीन आरोपी अब भी फरार: जितेन्द्र प्रजापति, शिवा उर्फ सूर्यकांत प्रजापति और सागर प्रजापति अभी फरार हैं। पुलिस टीमें इन तीनों की गिरफ्तारी के लिए संभावित स्थानों पर लगातार दबिश दे रही हैं।

रविवार को एक मिमी बारिश

सड़कें भीगी, सुबह से छाए रहे बादल, 10किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से चली हवाएं

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में रविवार सुबह मौसम ने करवट ली, सुबह 6 बजे आसमान में काले बादल छा गए। इसके बाद गरज के साथ हल्की बारिश शुरू हुई, यह बारिश सुबह 10 बजे तक जारी रही।

भू लेख अधिकारी आदित्य सोनाकिया ने बताया कि शहर में रविवार को 1 मिमी वर्षा दर्ज की गई। पिछले दिनों मौसम साफ रहा था। आने वाले दिनों में भी मौसम साफ रहने की संभावना है।

मौसम विभाग के अनुसार हवा 10 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही है। तापमान 26 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। मौसम में ठंडक महसूस की जा रही है। पूरे दिन हल्के बादल छाने की संभावना है। रविवार को जिले का न्यूनतम तापमान 19 डिग्री और शनिवार को अधिकतम तापमान 32 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था।

बता दें कि, इस साल अब तक 1074.9 मिमी बारिश हो चुकी है। यह पिछले साल की तुलना में ज्यादा है। पिछले साल 849 मिमी वर्षा दर्ज की गई थी।

रिहाइशी इलाके में खड़ी जीप में लगी आग

दमकल की टीम ने पाया काबू, शहडोल के ब्यौहारी इलाके की घटना

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। ब्यौहारी बस स्टैंड के पास रिहाइशी इलाके में पीयूष दुबे के घर के सामने खड़ी जीप में अचानक आग लग गई। घटना रविवार दोपहर की है।

आग लगने की सूचना मिलते ही आसपास के लोग मौके पर जमा हो गए। स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस और दमकल विभाग को सूचित किया। दमकल की टीम ने मौके पर पहुंचकर कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

पीयूष दुबे ने बताया कि होली के मद्देनजर उन्होंने जीप को घर के पास खड़ा किया था। आमतौर पर वह अपनी जीप सड़क किनारे खड़ी करते हैं। शनिवार शाम को अचानक जीप में आग लग गई।

स्थानीय लोगों के मुताबिक, जहां जीप खड़ी थी, वह पूरी तरह रिहाइशी इलाका है। हर घर में गैस सिलेंडर रखे हुए हैं। ऐसे में यह घटना बड़े हादसे का कारण बन सकती थी।

ब्यौहारी थाने के प्रधान आरक्षक सुखेंद्र त्रिपाठी होली ड्यूटी पर बस स्टैंड में तैनात थे। घटनास्थल बस स्टैंड से कुछ ही मीटर की दूरी पर था। हंगामा सुनकर वे भी मौके पर पहुंचे और आग बुझाने में मदद की। दमकल की टीम के पहुंचने तक स्थानीय लोगों और पुलिस ने मिलकर आग पर काबू पाने का प्रयास किया।

24 साल की युवती ने खाया जहर, मौत

पिता का आरोप- सात साल से ससुराल वाले प्रताड़ित कर रहे थे

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर के नौगांव थाना क्षेत्र के भदेसर गांव में एक 24 वर्षीय महिला ने जहर खा लिया। महिला की प्राइवेट अस्पताल में तीन घंटे के इलाज के बाद शनिवार रात को मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक, मृतिका रिंकी रैकवार के पति मनोज खेत पर काम करने गए थे। रिंकी घर पर अकेली थी, कुछ देर बाद पड़ोसियों ने देखा कि उसे उल्टियां हो रही हैं। इसकी सूचना परिवार को दी गई। रिंकी को तुरंत छतरपुर के एक प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया। तीन घंटे के इलाज के बाद देर रात उसकी मौत हो गई।

पिता ने ससुराल वालों पर लगाए आरोप: मृतका के पिता शंकरलाल ने गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने बताया कि बेटी की शादी को 7 साल हो गए थे। शादी के बाद से ही ससुराल पक्ष के लोग उसे परेशान करते थे। वहीं, पति मनोज का कहना है कि वह खेत पर काम कर रहे थे। पड़ोसियों से उल्टियों की जानकारी मिलने पर अस्पताल ले गए।

मृतका के दो बच्चे हैं। एक 6 साल का लड़का और 4 साल की लड़की। नौगांव थाना प्रभारी सतीश सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। पुलिस ने पंचनामा बनाकर शव का पोस्टमार्टम करवाया है। जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस लाइन में हुआ होली मिलन समारोह

एसपी मोतिउर रहमान समेत पूरे पुलिस परिवार ने एक-दूसरे को लगाए रंग

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिला मुख्यालय के पुलिस लाइन में रविवार को होली का त्योहार धूमधाम से मनाया गया। एसपी मोतिउर रहमान की अगुवाई में पुलिस स्टाफ और उनके परिवारजनों ने एक साथ होली का आनंद लिया।

कार्यक्रम में एडिशनल एसपी इसरार मंसूरी, रक्षित निरीक्षक ज्योति दुबे, सहित सभी थाना प्रभारी और एसडीओपी उपस्थित रहे।

त्योहार के दौरान पुलिस ने जिले में सुरक्षा व्यवस्था को भी सुनिश्चित किया। किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए पुलिस टीमें जगह-जगह पेट्रोलिंग करती रहीं।

धर्मांतरण मामले में टीचर समेत 2 आरोपी गिरफ्तार

50 से अधिक ग्रामीणों का धर्म बदलवाने की तैयारी थी

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली जिले में धर्मांतरण के एक मामले कार्रवाई की गई है। माड़ा थाना पुलिस ने रविवार को एक सरकारी स्कूल के शिक्षक समेत दो लोगों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों पर लोगों को पैसे का लालच देकर धर्म परिवर्तन कराने का आरोप है।

कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला के अनुसार, शिकायत मिलने पर विशेष टीम का गठन किया गया था। टीम को जानकारी मिली कि करसुआ राजा गांव में धार्मिक सभा का आयोजन किया जा रहा है। मौके पर छापेमारी की गई तो वहां 50 से अधिक लोग मौजूद मिले।

पुलिस ने इन्हें पकड़ा: पुलिस ने मुख्य आरोपी टीचर कमलेश साकेत और अरविंद साकेत को गिरफ्तार किया है। दोनों कोटिया के रहने वाले हैं। कमलेश करसुआ के सरकारी स्कूल में बच्चों को पढ़ाता है। मौके से ईसाई धर्म से जुड़ा साहित्य मिला है। कल सोमवार को पुलिस दोनों आरोपियों को कोर्ट में पेश करेगी।

जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि वह सभी धर्मों का सम्मान करता है। लेकिन अनैतिक गतिविधियों को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भविष्य में भी ऐसी शिकायतों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

देवर-भाभी पर फायरिंग, छेड़खानी का केस वापस लेने का दबाव बना रहे थे आरोपी, कंधे के आर-पार निकली गोली

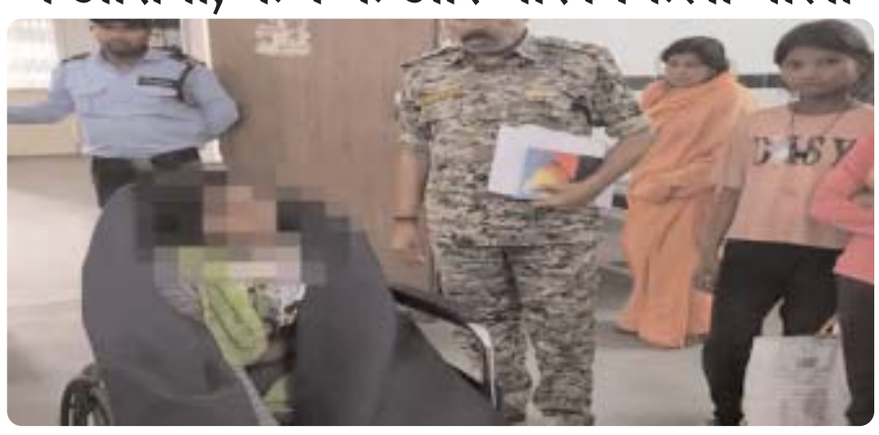

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर के थाना प्रकाश बम्होरी के ग्राम जोगा में रविवार सुबह आरोपियों ने देवर-भाभी को गोली मार दी। दोनों को पहले गौरिहार अस्पताल ले जाया गया। वहां से डॉक्टरों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया, जहां दोनों का इलाज जारी है।

पीड़ित देवर ने बताया कि आरोपियों ने पहले उनकी भाभी के साथ छेड़खानी की थी। इसकी शिकायत थाने में दर्ज कराई गई थी। इसके बाद से आरोपी केस वापस लेने का दबाव बना रहे थे। उन्होंने धमकियां भी दीं। पीड़ित परिवार ने थाने और एसपी कार्यालय में इसकी शिकायत की। लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की।

घटना के दिन भूरा पाल शौच के लिए गए थे। तभी चार लोगों ने उन्हें घेर लिया। आरोपियों ने उनकी कनपटी पर गोली मार दी। भूरा ने अपने भाई और भाभी को आवाज लगाई। आरोपियों ने भाई को पकड़ लिया। जब भाभी अपने पति को बचाने दौड़ीं, तो उनके दाहिने कंधे में भी गोली मार दी गई।

छेड़छाड़ के मामले में राजीनामे का दबाव बना रहे थे आरोपी: वहीं महिला के पति ने बताया कि आरोपी 3 माह से छेड़छाड़ के मामले में राजीनामा का दबाव बना रहे थे। इसके बाद छोटे भाई घर के पास को सिर की कनपटी पर गोली मारी। उसके चिल्लाने पर हम लोग आए, आरोपियों ने मुझे सिर में गोली मारने का प्रयास किया, गोली मेरे कान के बगल से निकल गई। इस दौरान पत्नी मुझे बचाने दौड़ी तो आरोपियों ने उसके कंधे में गोली मार दी। लग गई।

महिला के पति ने बताया कि 3 माह पहले पत्नी के साथ आरोपी देवती रैकवार ने छेड़छाड़ की थी। पुलिस ने आरोपी को पकड़ा और थाने से छोड़ दिया। उसके बाद उसने केस वापस लेने कई बार धमकियां दी गई। उसने बताया कि इसके बाद आज सुबह देवती, उसका पिता मथुरा, बड़ा भाई शोभारण, शोभारण का बेटा विष्णु सहित 5 लोग आए और विवाद करने लगे। इसके बाद देवती ने छोटे भाई भूरा को गोली मारी, शोभारण ने दूसरी गोली मारी इसके बाद महिला के पति रामाधीन को देवती ने गोली मारी, जो कान के बगल से निकल गई। वारदात के बाद आरोपी फरार हो गए।

भारत निर्वाचन आयोग, चुनावी प्रक्रिया को मजबूत बनाने पार्टी अध्यक्षों और वरिष्ठ नेताओं से करेगा बातचीत

आयोग ने मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों से अनिराकृत मुद्दों के लिए 30 अप्रैल तक मांगे सुझाव

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। भारत निर्वाचन आयोग ने कानून ढांचे के अंतर्गत चुनावी प्रक्रियाओं को और मजबूत बनाने के लिए पार्टी अध्यक्षों और वरिष्ठ नेताओं को बातचीत के लिए आमंत्रित किया है। आयोग ने मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों से ईआरओ, कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय स्तर पर अनिराकृत प्रकरणों की 30 अप्रैल, 2025 तक जानकारी मांगी है। आयोग ने इस संबंध में राजनीतिक दलों को व्यक्तिगत रूप से पत्र भी जारी किया है। उल्लेखनीय है कि पिछले सप्ताह भारत निर्वाचन आयोग द्वारा एक सम्मेलन किया गया था। जिसमें भारत निर्वाचन आयोग के मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री ज्ञानेश कुमार ने सभी प्रदेशों के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारियों के साथ बैठक की थी, जिसमें उन्होंने सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के सीईओ, डीईओ और ईआरओ को राजनीतिक दलों के साथ नियमित बैठक करने और प्राप्त सुझावों पर नियमानुसार निराकरण करने के निर्देश दिए थे। आयोग ने राजनीतिक दलों से विकेंद्रीकृत जुड़ाव के इस तंत्र का सक्रिय रूप से उपयोग करने का आग्रह भी किया है। चुनाव प्रकिया से संबंधित 28 हितधारक हैं, जिसमें राजनीतिक दल एक प्रमुख हितधारक है।

पिछड़ा वर्ग पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति के ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 20

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सहायक संचालक पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक कल्याण ने जानकारी देकर बताया है कि एम.पी.टास पोर्टल एवं एन.आई.सी पोर्टल 2.0 पर पिछड़ा वर्ग पो. मै. छात्रवृत्ति शैक्षणिक वर्ष 2023-24 के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए ऑनलाइन आवेदनों हेतु पोर्टल पुनः ओपेन किया गया है।

आयुक्त पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक कल्याण भोपाल द्वारा एम.पी.टास. पोर्टल एवं एन.आई.सी पोर्टल 2.0 पर पिछड़ा वर्ग पो.मै. छात्रवृत्ति शैक्षणिक सत्र 2023-24 के लिए नवीन/नवीनीकरण ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 20 मार्च निर्धारित की गयी है।

उन्होंने समस्त प्राचार्य शासकीय, अशासकीय एवं नोडल संस्थाओं को सूचित किया है कि उक्त के संबंध में तत्काल छात्रों को सूचित कर समय सीमा में ऑनलाइन आवेदन प्रस्तुत किये जाने हेतु निर्देशित करने का कष्ट करें। साथ ही उक्त के संबंध में जानकारी संस्था के सूचना पटल पर संलग्न कर समय सीमा में आवेदन कराया जाना सुनिश्चित करें।

विपणन वर्ष 2025-26 में चना, मसूर एवं सरसों के उपार्जन हेतु पंजीयन की तिथि अब 17 तक

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास संजय कुमार श्रीवास्तव ने जानकारी देकर बताया है कि समर्थन मूल्य पर चना, मसूर एवं सरसों की उपज बेचने वाले किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुये शासन ने पंजीयन की तारीख बढ़ाने का निर्णय लिया है।

उप संचालक कृषि ने बताया कि पंजीयन की अंतिम तारीख अब 17 मार्च 2025 तक कर दी गई है।

विचार

राम राज्य -सुशासन का मॉडल

सुशासन के दर्शन की उत्पत्ति मानव सभ्यता के आरंभिक दिनों में हुई है। सुशासन का सिद्धांत भारतीय समाज के लिए नया नहीं है। प्राचीन भारत में मामलों की स्थिति पर ध्यान देते हुए, यह देखा गया है कि राजा या शासक धर्म से बंधे थे जिसका सटीक अर्थ लोगों को सुशासन सुनिश्चित करना था। प्राचीन भारतीय महाकाव्यों में राज धर्म शब्द बहुत प्रसिद्ध था, जिसका अर्थ आचार संहिता या कानून का शासन था जो शासक की इच्छा से श्रेष्ठ था। महाभारत और रामायण जैसे महान महाकाव्यों में भी शासक सुशासन के सिद्धांत का पालन करता है। राम राज्य सुशासन का मानक है, इसलिए वाल्मीकि रामायण से ज्ञान के स्वर्णिम शब्दों को दोहराना सार्थक है। वाल्मीकि द्वारा लिखित राम के जीवन की गाथा रामायण को सभी भारतीय महाकाव्यों में सबसे महान माना जाता है। कथा को सामाजिक विज्ञान पर एक सत्य ग्रंथ माना जाता है, जो समय और स्थान दोनों से परे सबक प्रदान करता है। वास्तव में, यह प्रसिद्ध ग्रंथ नैतिकता और मूल्यों, शासन कला और राजनीति, और यहां तक कि सामान्य और मानव संसाधन प्रबंधन पर उपयोगी सुझाव देता है। इस शोधपत्र का उद्देश्य यह पता लगाना है कि त्रेतायुग के दौरान 'राम राज्य' में एक मॉडल के रूप में सुशासन कैसे हुआ।

सुशासन को परिभाषित करना आसान नहीं हो सकता है, फिर भी यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि यह शासन के बारे में अधिक और सरकार के बारे में कम है। जैसा कि प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक हेनरी डेविड थोरो ने कहा, वह सरकार सबसे अच्छी है जो कम से कम शासन करती है। मानव अधिकारों, लोकतांत्रिक सिद्धांतों और कानून के शासन को बनाए रखने वाले राजनीतिक और संस्थागत वातावरण के संदर्भ में, सुशासन न्यायसंगत और सतत विकास के उद्देश्यों के लिए मानव, प्राकृतिक, आर्थिक और वित्तीय संसाधनों का पारदर्शी और जवाबदेह प्रबंधन है। सुशासन आर्थिक प्रक्रियाओं और प्रशासनिक दक्षता पर अपने मूल फोकस से लोकतंत्र, कानून के शासन और भागीदारी के साथ मजबूत संबंधों वाले विषय में विकसित हुआ है। सुशासन उन मूल्यों की एक मानक अवधारणा है जिसके अनुसार शासन का कार्य साकार होता है, और वह तरीका जिसके द्वारा सामाजिक अभिनेताओं के समूह एक निश्चित भरपाई उन सिद्धांतों की पहचान करके की जाती है जो किसी भी समाज में सुशासन को मजबूत करते हैं। सबसे अधिक बार सूचीबद्ध सिद्धांतों में शामिल हैं- भागीदारी, कानून का शासन, निर्णय लेने की पारदर्शिता या खुलापन, जवाबदेही, पूर्वानुमेयता या सुसंगतता, और प्रभावशीलता। अंतर्राष्ट्रीय दाता समुदाय आम तौर पर इस दृष्टिकोण को साझा करता है कि ये सिद्धांत सतत विकास की नींव पर खड़े हैं।

नेपाल में सीएम का नहीं, महंत का पोस्टर लहराया गया

भारत और नेपाल के बीच रोटी-बेटी का रिश्ता प्राचीन काल से ही रहा है, इसलिये नेपाल में होने वाली प्रत्येक गतिविधि से भारत का प्रभावित होना स्वभाविक ही है। राजनैतिक अस्थिरता से तंग आ चुके नेपाली नागरिक पुनः राजशाही की मांग करने लगे हैं। काठमांडू में हुये जोरदार प्रदर्शन में उार प्रदेश के मुयमंत्री आदित्यनाथ योगी की तस्वीर भी दिखाई दी, जिसको लेकर सर्वाधिक चर्चा की जा रही है। विवाद खड़ा करने वाले, यह भूल ही गये हैं कि आदित्यनाथ योगी प्राचीन गोरखपुर मठ के महंत भी हैं, इस मठ और मठ के महंत को नेपाल में बहुत आदर दिया जाता है। मठ एवं महंत के प्रति आस्था, श्रद्धा और भक्ति भाव को कोई शासन व्यवस्था नहीं बदल सकती।

नेपाल में राजशाही व्यवस्था रहे अथवा, लोकतांत्रिक व्यवस्था रहे, इससे नेपाली नागरिकों के भाव नहीं बदल सकते, इसी विषय पर चर्चा कर रहे हैं बीपी गौतम... नेपाल में राजशाही के समर्थन में जोरदार प्रदर्शन हो रहे हैं। राजधानी काठमांडू में हजारों लोगों ने जुटकर लोकतांत्रिक सरकार के विरोध में आवाज उठाई और देश में एक बार फिर राजशाही को लौटाने की मांग की, इस आंदोलन से नेपाल में लोकतांत्रिक व्यवस्था को लेकर सवाल उठने लगे हैं। रविवार को नेपाल के पूर्व राजा ज्ञानेंद्र दो महीने तक धार्मिक दौरे पर पोखरा में रहने के बाद राजधानी काठमांडू लौटे थे। वे त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के बाहर निकले तो, उनके समर्थन में हजारों लोग जुट गये, इन लोगों में अधिकतर राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी (आरपीपी) के कार्यकर्ता थे, जो कि राजशाही के समर्थन के लिये जाने जाते हैं। काठमांडू में इतनी भीड़ जुट गई थी कि इसे संभालना भी मुश्किल हो गया। पूर्व राजा ज्ञानेंद्र का स्वागत करने के लिये सिर्फ एयरपोर्ट पर ही लगभग 10 हजार लोग जुटे थे, इनमें आरपीपी के अध्यक्ष लिंगदेन और नेपाल प्रमुख कमल थापा सहित कई वरिष्ठ नेता भी उपस्थित रहे। भीड़ के कारण पूर्व राजा ज्ञानेंद्र को एयरपोर्ट से घर तक पांच किलोमीटर की दूरी पूरी करने में ढाई घंटे का समय लग गया। काठमांडू पुलिस को एयरपोर्ट से लेकर निर्मल निवास राजपरिवार के घर तक सुरक्षा के कड़े इंतजाम करने पड़े, इस दौरान ही भीड़ में नारेबाजी शुरू हुई कि हमें अपना राजा वापस चाहिये। तमाम लोग हाथों में पोस्टर लिये भी दिखाई दिये, जिनमें नेपाल से संघीय गणतांत्रिक प्रणाली को समाप्त किया जाये और राजशाही को वापस लाओ... जैसे नारे लिखे थे, इन पोस्टरों में पूर्व राजा ज्ञानेंद्र और नेपाल के झंडे की तस्वीरें भी लगाई गई थीं। लोगों ने नेपाल में हिंदू धर्म को राष्ट्रीय धर्म घोषित करने की भी मांग की। नेपाल में 2008 तक राजशाही शासन था, इसके बाद लोकतंत्र समर्थकों के प्रदर्शन शुरू हो गये, जिससे राजशाही को समाप्त कर दिया गया था और फिर देश में चुनाव कराये गये थे लेकिन, नेपाल में राजशाही के अंत और लोकतंत्र के पूरी तरह से स्थापित होने के बाद देश में बीते 17 साल में 14 सरकारें बदल चुकी हैं। नेपाल में हालिया बदलाव मार्च 2024 और उसके बाद जुलाई 2024 में हुआ था। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (माओवादी सेंटर) के प्रमुख पुष्प कमल दहल प्रचंड ने शेर बहादुर देउबा के नेतृत्व वाली नेपाली कांग्रेस पार्टी के साथ 15 महीने पुराना गठबंधन तोड़ दिया था और फिर केपी शर्मा ओली के नेतृत्व वाली कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल-यूनिफाइड मार्क्सवादी लेनिनवादी (सीपीएन-यूएमएल) के साथ गठबंधन बनाया। हालांकि संसद में फ्लोर टेस्ट के दौरान कमल दहल प्रचंड बहुमत साबित नहीं कर पाये थ, इसके बाद राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने बाकी पार्टियों को सरकार के लिये दावा पेश करने का न्यौता दिया था, जिसके बाद केपी शर्मा ओली ने शेर बहादुर देउबा की नेपाली कांग्रेस का साथ लेकर सरकार बना ली। 2008 के बाद से नेपाल में कभी भी एक पार्टी की सरकार नहीं बनी है, यहां हमेशा दो या, इससे अधिक दलों के गठबंधन से ही सरकार बनी है, जिससे देश में राजनैतिक अस्थिरता का भी वातावरण रहा है। नेपाल में बड़ी संख्या में लोग इस अस्थिरता को विकास कार्यों में बाधा मानते हैं, इसलिये नेपाल में एक बड़ा तबका राजशाही समर्थक प्रदर्शनों में सम्मिलित होने लगा है। अधिकांश लोग राजनैतिक अस्थिरता से तंग आ गये हैं।

पूर्व राजा ज्ञानेंद्र के समर्थन में जब काठमांडू एयरपोर्ट के बाहर रैली चल रही थी, इस दौरान उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी का पोस्टर लहराया गया, जो चर्चा का विषय बना हुआ है। नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने राजशाही के समर्थन में किये गये प्रदर्शनों पर तो कोई टिप्पणी नहीं की लेकिन, उन्होंने इन रैलियों में आदित्यनाथ योगी की तस्वीरों को लेकर कटाक्ष किया। उन्होंने कहा कि किसी देश को ऐसी स्थिति में नहीं होनी चाहिये, जहां विदेशी नेताओं की तस्वीरों का इस्तेमाल प्रदर्शनों में हो, उनके समर्थकों ने भी आरोप लगाया कि ज्ञानेंद्र के समर्थन के पीछे भारत का हाथ है। हालांकि, नेपाल के पूर्व राजा ज्ञानेंद्र ने आरोपों को सिरे से निरस्त कर दिया। उनकी ओर से कहा गया कि रैली में आदित्यनाथ योगी के पोस्टर राजशाही समर्थक आंदोलन की छवि खराब करने का प्रयास है। उन्होंने इसके पीछे केपी शर्मा ओली के नेतृत्व वाली सरकार को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने ओली सरकार पर रैली में घुसपैठ कराने का भी आरोप लगाया। राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के प्रवक्ता ज्ञानेंद्र शाही ने सोशल साइट्स पर पोस्ट में दावा किया कि रैली में योगी आदित्यनाथ की फोटो केपी शर्मा ओली की सलाह पर दिखाई गई। उन्होंने इसके पीछे ओली के मुख्य सलाहकार बिष्णु रिमल का हाथ बताया।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी के नेपाल राजपरिवार से अच्छे रिश्ते हैं, जो सार्वजनिक हैं। आदित्यनाथ योगी गोरखनाथ मठ के महंत हैं, जिसका नेपाल के राजपरिवार के साथ ऐतिहासिक संबंध रहा है। मठ को स्थापित करने वाले बाबा गोरखनाथ नेपाल पर कई वर्षों तक शासन करने वाले शाह परिवार के इष्टदेव रहे हैं। ज्ञानेंद्र शाह के भाई बीरेंद्र शाह के आदित्यनाथ योगी के गुरु रहे महंत अवैद्यनाथ की गुरु के रूप में सेवा की थी। राजा बनने के बाद बीरेंद्र शाह 1992 में स्वयं कार चलाकर काठमांडू से गोरखपुर मठ तक आये थे। कहा जाता है कि 1990 में जब नेपाल में संविधान संशोधन किया गया तब महंत अवैद्यनाथ की सलाह पर ही राजा बीरेंद्र शाह ने नेपाल को हिंदू राष्ट्र के तौर पर आगे बढ़ाने का निर्णय लिया था। नेपाल राजपरिवार और गोरखनाथ मठ की घनिष्ठता नेपाल में लोकतंत्र स्थापित होने के बाद रहे हैं। 2015 में नेपाल में भीषण भूकंप आया था तब गोरखपुर के सांसद के रूप में आदित्यनाथ योगी ने सीमा क्षेत्रों स्वयं निर्माण कार्यों की निगरानी की थी, साथ ही राहत और बचाव कार्यों में मदद की थी। नेपाल में राजशाही का इतिहास लगभग 240 साल पुराना है। 1768 में स्थापित हुये नेपाल साम्राज्य का अंत ज्ञानेंद्र के राजा रहते हुये ही हुआ था। वर्ष- 2002 में ज्ञानेंद्र के बड़े भाई और नेपाल के राजा बीरेंद्र बीर बिक्रम शाह के साथ पूरे परिवार की हत्या कर दी गई थी, इसके बाद ज्ञानेंद्र शाह नेपाल के राजा बने थे, उन्होंने नेपाल के संवैधानिक प्रमुख के तौर पर काम किया लेकिन, 2005 में उन्होंने सत्ता अपने हाथ में ले ली थी, उन्होंने राजशाही का विरोध कर रहे माओवादी विद्रोहियों को समाप्त करने का प्रयास किया, जिससे उन्होंने संसद भंग करने के साथ सरकार भी गिरा दी थी, इस दौरान नेपाल के कई नेताओं और पत्रकारों को जेल में डाल दिया गया था, साथ ही आपातकाल लगाकर संचार व्यवस्था को भी बंद कर दिया गया था और सुरक्षा व्यवस्था सेना को सौंप दी गई थी पर, ज्ञानेंद्र का यह कदम उल्टा पड़ गया, उनके विरोध में नेपाल की सड़कों पर जोरदार प्रदर्शन हुये, जिसके बाद 2006 में उन्हें सत्ता को छोड़ना पड़ा, इसके बाद सरकार का माओवादियों के साथ शांति समझौता हुआ, जिसके बाद देश में गृह युद्ध का अंत हुआ। 2008 में संसद ने नेपाल की शासन व्यवस्था में राजशाही की भूमिका को समाप्त कर दिया था और फिर देश को धर्मनिरपेक्ष गणतंत्र के तौर पर स्थापित कर दिया गया था। काठमांडू स्थित नारायणहिती पैलेस नेपाल का एक ऐतिहासिक महल था, इसका निर्माण 1963 में राजा महेंद्र के आदेश पर करवाया गया था। नारायणहिती का अर्थ होता है नारायण (विष्णु) और हिती (पानी की टोंटी)। 383,850 वर्ग मीटर में फैला यह महल अपने आप में विविधता को समेटे हुये हैं। महल में 52 कमरे हैं, प्रत्येक कमरे का अलग नाम है, जो नेपाल के 52 जिलों के नाम पर रखे गये हैं। मुख्य द्वारा का नाम नेपाल के पहाड़ों के नाम पर रखा गया था, इस महल में सोने का रथ है, जो राजा महेंद्र को ब्रिटिश महारानी एलिजाबेथ द्वितीय पहली बार उपयोग 24 फरवरी 1975 को राजा बीरेन्द्र शाह के राज्याभिषेक में हुआ था, यहां रॉयल क्राउन है, जो नेपाल के राजा की शक्ति और एकता का प्रतीक था, इस क्राउन में 730 हीरे और 2000 से अधिक मोती जड़े हैं, इसके अलावा महल में सोने-चांदी की नक्काशी और बेशकीमती झूमर लगे हैं, इसी महल में 1 जून 2001 को नेपाली शाही परिवार का नरसंहार हुआ था।

आखिर कांग्रेसी क्यों कर रहे हैं भाजपा का काम

श्वलोकसभा चुनाव के बाद हरियाणा, महाराष्ट्र और दिल्ली में मिली पराजय के बाद कांग्रेस की हालत खस्ता है। पार्टी ने अपने बलबूते आखिरी बार 1984 में केंद्र में प्रचंड बहुमत से सरकार बनाई थी। उसके बाद कांग्रेस ने दिवंगत पी.वी. नरसिम्हा राव (1991-96) और दिवंगत डा. मनमोहन सिंह (2004-14' के नेतृत्व में गठबंधन की सरकार चलाई। परंतु अब कांग्रेस की स्थिति जितना सोचा था, उससे कहीं अधिक बदत्तर है। गत 8 मार्च को गुजरात पहुंचे कांग्रेस के शीर्ष नेता और लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी अपने ही नेताओं पर भड़क गए और कहा, ''कांग्रेस में नेताओं की कमी नहीं है,बब्बर शेर हैं, मगर पीछे चेन लगी हुई है। अगर हमें सख्त कार्रवाई करनी पड़ी, 40 लोगों को निकालना पड़ा तो निकाल देना चाहिए। भाजपा के लिए अंदर से काम कर रहे हैं।'' आखिर राहुल का अपनी पार्टी के नेताओं पर इस अविश्वास का कारण क्या है।

निस्संदेह, कांग्रेस समर्थकों-हितैषियों के लिए यह चिंतन और चिंता का विषय है कि आम जनता के साथ कांग्रेस का एक वर्ग भी न केवल भाजपा-संघ की नीतियों से प्रभावित है, बल्कि उसके लिए अंदरखाते से काम भी कर रहा है। वास्तव में, राहुल और उनके सलाहकार पार्टी के संकट को समझने में बार-बार चूक कर रहे हैं। कांग्रेस की सबसे बड़ी समस्या उसके नेतृत्व की अस्थिरता, दिशाहीनता और जनभावना से भीषण कटाव है। कांग्रेस सनातन संस्कृति के प्रति अपनी प्रत्यक्ष-परोक्ष घृणा प्रदर्शित करके भाजपा संघ से अलग पहचान बना रही है। इसके लिए पार्टी नेतृत्व हिंदुओं को जातियों में बांटने और मुसलमानों को इस्लाम के नाम एकजुट रखने की विभाजनकारी राजनीति से भी गुरेज नहीं करता।

बीते दिनों कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे का 'गंगा में डुबकी लगाने से गरीबी दूर नहीं होती, संबंधित बयान इसी मानसिकता से जनित है। यह बात अलग है कि कि कर्नाटक के उप-मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार, हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू और सचिव पायलट सहित कई कांग्रेसी नेता महाकुंभ में स्नान करते दिखे और इनमें कुछ ने राजनीति से ऊपर उठ कर इतने विशाल आयोजन के लिए उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार की प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रशंसा भी की। इससे कांग्रेस नेतृत्व और बेचैन हो गया।

वैचारिक-राजनीतिक कारणों से राहुल गांधी इस हद तक मोदी-विरोध में चूर हो चुके हैं कि वे अपने वक्तव्यों से भारत के आत्मसम्मान, देश की एकता, अखंडता, सुरक्षा के साथ वैश्विक कूटनीति में राष्ट्रीय हितों को भी दांव पर लगाने से परहेज नहीं कर रहे है। बीते दिनों लोकसभा में राहुल ने बेतुका दावा किया कि विदेश मंत्री जयशंकर बार-बार अमरीका इसलिए गए ताकि प्रधानमंत्री मोदी को ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह में बुलाया जा सके। क्या यह वर्तमान विपक्ष की सबसे ओछी राजनीति नहीं है। जब अमरीका में ट्रंप द्वारा प्रधानमंत्री मोदी की प्रशंसा हुई, तो उसे कांग्रेसी सांसद और पूर्व विदेश राज्यमंत्री शशि थरूर ने आशाजनक बताया। यह भी कांग्रेस नेतृत्व को चुभ गया।

यह कोई पहली बार नहीं है। वर्ष 2018 में राहुल ने राफेल प्रकरण पर फ्रांसीसी राष्ट्रपति के नाम पर एक बेबुनियाद दावा किया था, जिसका खंडन खुद फ्रांसीसी सरकार को करना पड़ा। 2017 में जब डोकलाम में भारत चीनी उकसावे का प्रतिकार रहा था, तब राहुल गुप्त तौर पर चीनी राजदूत से मिलने चले गए। अपने हालिया विदेशी दौरों में राहुल कई बार इस बात पर असंतुष्ट हो चुके हैं कि अमरीका, यूरोप अब भारत के आंतरिक मामलों पर कुछ नहीं बोलता। कई अवसरों पर राहुल भारत को राष्ट्र के बजाय राज्यों का संघर्ष बता चुके हैं। राहुल की यह मानसिकता उन विदेशी विचारधाराओं के अनुरूप है, जिसमें देश की मूल सनातन संस्कृति, पहचान और इतिहास के प्रति हीन-भावना और भारत को राष्ट्र नहीं मानने का चिंतन है।

ऐसे ही मानस से ग्रस्त होने के कारण राहुल जाने-अनजाने में किस प्रकार भारत-विरोधी शक्तियों को मौका दे रहे है, यह उनके सितंबर 2024 के अमरीका दौरे में इस बयान से स्पष्ट है। तब उन्होंने कहा था, ''लड़ाई इस बात की है कि एक सिख होने के नाते क्या उन्हें भारत में पगड़ी, कड़ा पहनने या गुरुद्वारा जाने की अनुमति मिलेगी' इसे आधार बनाकर अमरीका-कनाडा स्थित खालिस्तानी चरमपंथियों ने भारत के खिलाफ जहर उगलना शुरू कर दिया। हाल ही में राहुल ने यहां तक कह दिया कि कांग्रेस की लड़ाई अब सिर्फ भाजपा-संघ से ही नहीं, बल्कि 'इंडियन स्टेट अर्थात' समूचे भारत से है।

आखिर यह कैसी मानसिकता है, क्या यह सच नहीं कि जिहादियों, इंजीलवादियों के साथ नक्सलवादी भी दशकों से 'इंडियन स्टेट' के खिलाफ 'युद्धरत' हैं। जब भारतीय सनातन संस्कृति में हजारों वर्षों से संवाद और असहमति को स्वीकार करने की परंपरा रही है, तो भारतीय सियासत में राजनीतिक- वैचारिक विरोधी को प्रतिद्वंद्वी के बजाय शत्रु मानने की विकृति कहां से आई। स्वतंत्रता से पहले और बाद में 1960-70 के दशक तक विभिन्न राजनीतिज्ञों में मतभिन्नता थी, परंतु बहुत हद तक उनमें मनभेद और शत्रुभाव नहीं था। हालिया वर्षों में इस अराजकतावादी राजनीति को यदि किसी ने और तीव्रता के साथ गति दी है तो वह निस्संदेह राहुल गांधी ही हैं।

6 दोस्त समेत 10 की मौत, बालोद में ट्रक से भिड़ी बाइक, कोरबा में कार ने 3 को उड़ाया, कोरिया में 4 मौत

मीडिया ऑडीटर, बालोद (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बालोद, कोरबा और कोरिया में शनिवार को हादसे में 6 दोस्त समेत 10 की मौत हो गई। बालोद में सड़क पर खड़ी कार से बाइक भिड़ गई, जिससे 3 दोस्तों की मौत हो गई। कोरबा में कार ने बाइक सवार 3 दोस्तों को उड़ा दिया। वहीं कोरिया में हादसे में 4 लोगों की जान चली गई।

मिली जानकारी के मुताबिक बालोद में मरने वाले में पीयूष साहू (17), अनिल साहू (18) और विकास ठाकुर (22) शामिल हैं। वहीं कोरबा में ननकू उर्फ अखलेश्वर (18), आदित्य धोबी (21) और सूरज कंवर (21) की जान गई है। सड़क हादसे में 4 दिन में 27 लोगों की मौत हुई है।

पहला मामला- बालोद में 3 दोस्तों की मौत: दरअसल, बालोद जिले में सड़क हादसे में 3 दोस्तों की मौत हो गई। होली के दूसरे दिन शनिवार रात तीनों बाइक पर सवार होकर घूमने निकले थे। तेली टोला गांव से अपने घर लौट रहे थे, तभी खड़ी ट्रक से उनकी बाइक जा टकरा गई। घटना अर्जुन्दा थाना क्षेत्र के मनकी गांव के पास हुई। हादसे में तीनों की मौके पर ही मौत हो गई। इनमें एक नाबालिग था। बताया जा रहा है कि रात में अंधेरा होने के कारण सामने खड़ा ट्रक दिखाई नहीं दिया, जिससे हादसा हुआ।

सभी एक ही गांव के रहने वाले थे: अर्जुंदा थाना प्रभारी लक्ष्मी प्रसाद जायसवाल ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची। 2 मृतक साहू परिवार से और एक ठाकुर परिवार से थे। सभी एक ही गांव के रहने वाले थे। हादसे के बाद शवों को अर्जुंदा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। रात होने जाने के कारण रविवार यानी आज पोस्टमॉर्टम के बाद अंतिम संस्कार किया जाएगा। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। युवकों की एक साथ मौत से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

दूसरा हादसा- कोरबा में 3 दोस्तों की मौत: वहीं दूसरा हादसा शनिवार को कोरबा जिले के जटगा चौकी इलाके में हुआ। सड़क हादसे में तीन दोस्तों की जान चली गई। होली के दूसरे दिन सुबह तीनों एक ही बाइक में सवार होकर किसी काम से निकले थे। इसी दौरान खोडरी के पास तेज रफ्तार कार और बाइक की आमने-सामने की टक्कर हो गई। इस टक्कर में कार भी बुरी तरह डैमेज हो गई, साथ ही कार चालक भी घायल हुआ है। तीनों बचपन के दोस्त थे। एक ही गांव बरबसपुर स्कूल बस्ती के रहने वाले थे। वहीं से वे जटगा की तरफ जा रहे थे। टक्कर इतनी भीषण थी कि 2 लोगों मौके पर मौत हो गई। वहीं एक ने अस्पताल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया।

हादसे के बाद राहगीरों ने पुलिस को सूचना दी: घटना के बाद राहगीरों ने 112 और जटगा चौकी पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव का पंचनामा किया। हादसे में बाइक और कार दोनों पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए हैं। घटना की जानकारी मिलते ही मृतकों के परिजन और गांव के लोग भी मौके पर पहुंचे। परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

तेज रफ्तार के कारण हादसा: जटगा चौकी प्रभारी सुरेश कुमार जोगी के अनुसार, दोनों वाहन तेज रफ्तार में होने के कारण यह हादसा हुआ। घायल कार चालक जटगा का रहने वाला है। उसके कंधे पर चोट आई है। जहां अस्पताल में उसका इलाज जारी है।

तीसरा मामला- कोरिया में 4 लोगों की मौत: तीसरा हादसा कोरिया जिले में हुआ। हादसे में 4 युवकों की मौत हो गई। शनिवार रात तेज रफ्तार 2 बाइकों की आमने-सामने टक्कर हो गई। हादसा कटगोड़ी के पास हुआ। टक्कर इतनी भीषण थी कि चारों युवकों की मौके पर ही मौत हो गई।

घटना सोनहत थाना क्षेत्र में हुई। पुलिस के मुताबिक दोनों बाइकों की रफ्तार काफी तेज थी। सूचना मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई। पुलिस ने चारों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

वहीं, हादसे में घायल एक युवक को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां उसका इलाज चल रहा है। घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है, जिसमें 2 बाइक आमने-सामने टकराती नजर आ रही हैं।

200 रुपए के लिए भिड़े महिला कारोबारी और दुकानदार

दुकानदार पर चाकू से हमला करने का आरोप, तो बहनों पर पत्थरबाजी का केस दर्ज

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर में 200 रुपए के लिए रियल एस्टेट कारोबारी परिवार और दुकानदार के बीच जमकर मारपीट हुई है। कारोबारी महिला के भाई पर आरोप है कि उसने सामान लेने के बाद पैसे नहीं दिए, जिस पर दुकानदार ने उससे बहस की और फिर मारपीट कर उसकी गाड़ी की चाबी छीन ली। जब उसकी बहनें गाड़ी लेने पहुंचीं, तो उनके साथ भी बदसलूकी और मारपीट की गई। दूसरी ओर, दुकानदार का आरोप है कि महिलाओं ने विवाद शुरू किया और पत्थर से सिर पर हमला किया। फिलहाल पुलिस ने दोनों पक्षों की तरफ से एफआईआर दर्ज कर लिया है।

क्या है पूरा मामला: यह पूरा मामला राजेंद्र नगर थाना क्षेत्र का है। चंचल शर्मा ने पुलिस को बताया कि वह अमलीडीह में रहती है और रियल स्टेट का काम करती हैं। 15 मार्च की शाम 6 बजे के करीब मेरे भाई प्रद्युमन शर्मा ने फोन पर बताया कि मोहल्ले के किराना दुकान वाले ने उसके साथ गाली-गलौज और मारपीट की है।

विवाद सामान के 200 रुपए को लेकर शुरू हुआ था। इसके बाद दुकानदार ओमप्रकाश साहू और कमलेश साहू ने उसकी गाड़ी की चाबी भी छीन ली है। इसके बाद चंचल अपनी बहन के साथ कार से घटनास्थल पर बाइक की चाबी लेने के लिए पहुंची। चंचल का आरोप है कि दुकानदार ने उस पर चाकू से हमला किया और कार में भी जमकर तोड़फोड़ की। इस दौरान दोनों बहनों को चोटें आई।

दुकानदार बोला- बहनों ने पत्थर से मारा: इस मामले में दूसरी एफआईआर कमलेश साहू ने दर्ज कराई है। उन्होंने बताया कि मेरा छोटा भाई ओमप्रकाश किराना का दुकान चलाता है। पड़ोसी प्रद्युमन शर्मा दुकान में सामान लेने आया। फिर उसने सामान लेने के बाद पैसे दे दिया हूं, बोलकर विवाद शुरू किया। विवाद बढ़ने पर उसने अपनी बहनों को भी बुला लिया। फिर उन्होंने पत्थर से सिर पर हमला कर दिया। फिलहाल, पुलिस दोनों पक्षों के बयान लेकर मामले की जांच कर रही है।

स्पेशल समर स्पोकन इंग्लिश क्लास का आयोजन नाइस टेक कंप्यूटर सेंटर डोमन हिल में

एमसीबी। अंचल के बच्चों में ग्रामर और स्पोकन इंग्लिश को मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से स्पेशल समर स्पोकन इंग्लिश क्लास का प्रारंभ चिरमिरी के वार्ड क्रमांक 40 नाइस टेक कंप्यूटर सेंटर में 20 मार्च 2025 से किया जा रहा हैं। संचालनकर्ता डी. बैजू ने उक्त स्पेशल समर क्लास के संबंध में चर्चा करते हुए कहा वर्तमान में इंग्लिश हर क्षेत्र में आवश्यक हो गई है, विद्यार्थी बेसिक ग्रामर की अच्छी पकड़ होने पर ही अच्छे अंक प्राप्त कर सकता है । अभिभावक विस्तृत जानकारी मोबाइल नंबर 8839940592 या 7987259792 में प्राप्त कर सकते हैं। बच्चे गर्मी की छुट्टियों का सदुपयोग कर सकें इसलिए क्षेत्र के समस्त अभिभावकों से अपील की जाती है कि अपने बच्चों में ग्रामर -स्पोकन इंग्लिश के साथ-साथ समग्र विकास हेतु ज्यादा से ज्यादा अपने बच्चों को हमारे स्पेशल समर स्पोकन इंग्लिश क्लास में उपस्थिति हेतु भेजें ताकि हमारे गुणवत्तापूर्ण क्लास से हमारे क्षेत्र के अधिकांश बच्चे लाभान्वित हों।

होली पर जमकर चले लाठी-डंडे, रंग लगाने के दौरान विवाद, बदला लेने दूसरे दिन महिलाओं ने मिलकर मारा

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में होली के दिन रंग लगाने के दौरान युवकों के दो गुटों में विवाद हो गया। इस दौरान लाठी-डंडो से मारपीट की गई, जिसका वीडियो भी सामने आया है। इस हमले में करीब आधा दर्जन युवक घायल हो गए। मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है। हमले के दूसरे दिन शनिवार को बदला लेने के लिए फिर से झगड़ा हुआ, जिसमें महिलाओं ने युवकों पर लाठी बरसाई। इस घटना में कुछ महिलाओं को भी चोट लगी है।

घटना के बाद महिलाएं ट्रैक्टर में सवार होकर थाने में शिकायत दर्ज कराने पहुंची। इस दौरान कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाते हुए रात में एसपी दफ्तर के बाहर प्रदर्शन किया। हालांकि, पुलिस ने दोनों पक्षों पर केस दर्ज कर लिया है।

पुरानी रंजिश को लेकर विवाद: दरअसल, मंगला के धुरीपारा में रंगोत्सव पर्व पर युवकों के दो गुटों में पुरानी रंजिश को लेकर विवाद हो गया। देखते देखते उनका विवाद हिंसक हो गया। इस दौरान बदमाशों ने दूसरे पक्ष के युवकों पर जमकर लाठी-डंडे चलाए। मामले में घायलों ने हमलावरों के खिलाफ शिकायत की, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंच गई। इस दौरान पुलिस को हमलावरों को खदेड़ना पड़ा। केस दर्ज कर हमलावर युवकों की तलाश शुरू कर दी गई है।

थाने पहुंची महिलाएं: जिस समय महिलाएं थाने पहुंची तब वहां पहले से भीड़ मौजूद थी। पुलिस ने उन्हें थोड़ा इंतजार करने कहा। लेकिन, महिलाएं वहां से ट्रैक्टर में सवार होकर एसपी ऑफिस पहुंच गईं। महिलाएं आरोप लगाने लगी कि सिविल लाइन टीआई अपराधियों को संरक्षण दे रहे हैं, जिससे उनका एफआईआर नहीं लिख रहे हैं। इस दौरान करीब आधे घंटे तक महिलाओं ने एसपी ऑफिस के सामने प्रदर्शन भी किया। हालांकि, दोबारा थाने जाने पर उनकी एफआईआर दर्ज हो गई।

सोशल मीडिया में वायरल हो रहा वीडियो: महिलाओं से मारपीट और गाली-गलौज का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में युवकों के साथ ही महिलाएं भी लाठी-डंडे से लैस होकर हमला करती नजर आ रहीं हैं। वहीं, इससे पहले का भी एक वीडियो है, जिसमें युवकों के दो गुटों में लाठी-डंडा चल रहा है।

एफआईआर दर्ज कराने पर बदला लेने किया हमला: दरअसल, पूरा झगड़ा विवाद को लेकर शुरू हुआ। होली के दौरान रंग लगाने को लेकर युवकों के दो पक्षों में विवाद हुआ था, जिसका बदला लेने के लिए युवकों ने शनिवार दोपहर गाली-गलौज करते हुए मारपीट करने लगे। जिसके बाद महिलाएं भी लाठी-डंडा लेकर इस विवाद में कूद गईं।

चलती मालगाड़ी को ट्रक ने मारी टक्कर

गार्ड ब्रेक डिब्बा पटरी से उतरा, ओपन फाटक पर हादसा

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। कोरबा में चलती मालगाड़ी को एक ट्रक ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि मालगाड़ी का गार्ड ब्रेक डिब्बा पटरी से नीचे उतर गया। हादसा दीपका स्श्चष्टरु सिरकी रेलवे साइडिंग में ओपन फाटक पर हुआ। घटना के समय मालगाड़ी ओपन फाटक से गुजर रही थी। ट्रक चालक को लगा कि मालगाड़ी आगे निकल जाएगी। लेकिन तेज रफ्तार के कारण ट्रक मालगाड़ी के अंतिम डिब्बे से टकरा गया। टक्कर की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर जमा हो गए।

ओपन फाटक होने के कारण हादसों का डर: स्थानीय लोगों के मुताबिक, साइडिंग पर न तो कोई सुरक्षा व्यवस्था है और न ही सुरक्षा कर्मी तैनात हैं। ओपन फाटक होने के कारण बड़े हादसा का खतरा बना रहता है।

यह पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी दीपका रेलवे क्रॉसिंग पर कई बार ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं। इससे न केवल कोयला परिवहन प्रभावित होता है, बल्कि आम लोगों की जान-माल को भी खतरा है।

ओपन फाटक होने के कारण हादसों का डर: स्थानीय लोगों के मुताबिक, साइडिंग पर न तो कोई सुरक्षा व्यवस्था है और न ही सुरक्षा कर्मी तैनात हैं। ओपन फाटक होने के कारण बड़े हादसा का खतरा बना रहता है। यह पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी दीपका रेलवे क्रॉसिंग पर कई बार ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं। इससे न केवल कोयला परिवहन प्रभावित होता है, बल्कि आम लोगों की जान-माल को भी खतरा है।

मालगाड़ी को पटरी पर लाने में जुटे: सूचना मिलते ही कोरबा रेलवे प्रबंधन और आरपीएफ की टीम मौके पर पहुंची। आरपीएफ प्रभारी सतीश कुमार ने बताया कि रेलवे की आरडी टीम मालगाड़ी को पटरी पर लाने का काम कर रही है। मामले में आगे की कार्रवाई जारी है।

बॉयफ्रेंड ने गर्लफ्रेंड को पीट-पीटकर मार डाला

ढुकू प्रथा के तहत लिव-इन में रह रहे थे दोनों, युवक ने शराब के नशे में की मारपीट

मीडिया ऑडीटर, कोरिया (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में बॉयफ्रेंड ने गर्लफ्रेंड को पीट-पीटकर मार डाला। बताया जा रहा है कि प्रेमी-प्रेमिका लिव-इन में रह रहे थे। प्रेमी ने शराब के नशे में वारदात को अंजाम दिया है। मामला बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के गुलिया सरई का है। मिली जानकारी के मुताबिक मृतिका का नाम सूरजमनिया (33) है, जो सूरजपुर जिले के रामानुजनगर के पतरापाली गांव की रहने वाली थी। वहीं प्रेमी का नाम नारायण सिंह (33) है, जो कोरिया जिले के गुलिया सरई निवासी है।

अब जानिए क्या है पूरा मामला: दरअसल, दोनों प्रेमी प्रेमिका ढुकू प्रथा के तहत पिछले 2 साल से लिव-इन में रह रहे थे, लेकिन प्रेमी ने शराब के नशे में धुत रहता था। प्रेमिका से मारपीट करता था, जिससे तंग आकर प्रेमिका अपने गांव आ गई थी। एक महीने पहले प्रेमी नारायण युवती के घर आया।

इस दौरान उसने सूरजमनिया को भरोसा दिलाया कि अब वह उसके साथ मारपीट नहीं करेगा। समझाइश के बाद सूरजमनिया को लेकर वापस कोरिया चला गया।1 हफ्ते पहले नारायण फिर शराब पीकर घर पहुंचा। उसने सूरजमनिया से मारपीट की, जिससे सूरजमनिया गंभीर रूप से घायल हो गई। परिजनों ने बताया कि नारायण ने बेटी का इलाज भी नहीं कराया। अंदरूनी चोटों के कारण सूरजमनिया की हालत बिगड़ती गई। इसके बाद सूरजमनिया ने मां को मारपीट की जानकारी दी। मां रजमनिया ने 4 दिन पहले बैकुंठपुर जिला अस्पताल में भर्ती कराया, लेकिन डॉक्टरों ने अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल रेफर कर दिया। सूरजमनिया की हालत गंभीर होने के कारण इलाज के दौरान शनिवार को मौत हो गई। मौत के बाद पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया।

पुलिस ने मृतिका के परिजनों का दर्ज किया बयान: अंबिकापुर एएसपी अमोलक सिंह ने बताया कि मामले में मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल पुलिस सहायता केंद्र में परिजनों का बयान दर्ज किया गया है। मामले की केस डायरी कोरिया पुलिस को भेजी जा रही है। जांच के बाद आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

होली हुड़दंग में सतरंगी गुलाल, मंत्री के निज निवास में आयोजित हुआ होली मिलन समारोह

मंत्री के गृह ग्राम रतनपुर निवास में क्षेत्र के परिवारजनों के साथ होली मिलन समारोह

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल के निज निवास ग्राम रतनपुर में होली मिलन समारोह 2025 का आयोजन किया गया। इस आयोजन में प्रेस क्लब के अध्यक्ष राजेश उपाध्याय सहित समस्त पत्रकार बंधु जिलाध्यक्ष चंपा देवी पावले सहित पूर्व केंद्रीय मंत्री व भरतपुर सोनहत की विधायक रेणुका सिंह और विधानसभा के समस्त नगरीय निकाय के जनप्रतिनिधियों सहित वार्ड पार्षद, खड़गवां, चिरमिरी भाजपा मंडल के पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में ग्रामीणों को आमंत्रित किया गया था। दोपहर 3 बजे से प्रारंभ हुआ होली मिलन समारोह का कार्यक्रम 8 बजे तक चला जिसमें हजारों की संख्या में शामिल हुए लोग सतरंगी गुलाल में सराबोर रहे। एक दूसरे को गुलाल लगा गले मिलने के साथ होली की बधाईया देने का दौर चला। मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने एक एक कर सभी को गुलाल लगाए और सद्भाव के पर्व होली की शुभकामनाएं दी।

विदित हो कि होली भारत में मनाया जाने वाला पारंपरिक हिंदू त्यौहार है, बताया जाता है कि यह मुख्य रूप से मार्च में पूर्णिमा के दिन यह मनाया जाता है जो बसंत के आगमन का जश्न होता है। इसी हिन्दू धर्म के पारंपरिक त्यौहार का आयोजन प्रतिवर्ष को भांति इस वर्ष भी ग्राम रतनपुर में आयोजित की गई। होली हुड़दंग के बीच स्थानीय कलाकारों के माध्यम से प्रस्तुत फाग के गीतों का रसपान उपस्थित जनों ने किया। समाज में एकता, भाईचारा और सद्भाव स्थापित कर एक साथ मिलजुलकर मनाने वाला यह होली का पर्व एकता और भाईचारे को प्रगाढ़ करता है। इस दौरान जिलाध्यक्ष श्रीमती चंपा देवी पावले, विधायक श्रीमती रेणुका सिंह, एनआरआई चंद्रकांत पटेल सहित बड़ी हस्तियों ने होली के पर्व की विशेषताओं का व्याख्यान अपने अपने विचारों में व्यक्त किए तो वही स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने कहा कि होली भाईचारा और सद्भाव का प्रतीक है। आज कई सालों से हम यहां पर होली मिलन समारोह के माध्यम से भाईचारा और एकता स्थापित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित करते आ रहे है। होली का दिन एक ऐसा दिन होता है, जब हम राजनीति से ऊपर उठकर एक दूसरे के गलतियों, खामियों को भुलाकर मानव धर्म के वैचारिक मूल्यों पर चलने का प्रयास करते है। यह त्यौहार हमें एकता के सूत्र में बांधता है। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दू धर्म का हर एक त्यौहार हमें सामाजिक ढांचे में गढ़ने का प्रयास

शिक्षक की कार को बदमाशों ने लगाई आग

एक दिन पहले बच्चे को मारने दौड़ाया था, मना करने पर फूंक दी कार

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर/दंतेवाड़ा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में एक शिक्षक की कार को बदमाशों ने आग के हवाले कर दिया है। बताया जा रहा है कि एक दिन पहले बदमाश एक बच्चे को मारने के लिए दौड़ा रहे थे। तब शिक्षक ने उन्हें रोका था। इसी बात से खफा होकर उन्होंने कार में आग लगा दी।

मामला गीदम थाना क्षेत्र का है। पीड़ित ने थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई है। शिक्षक राकेश मिश्रा गीदम कन्या शाला में पोस्टेड हैं। उन्होंने बताया कि एक दिन पहले उनके साथ के एक शिक्षक के बेटे को कुछ बदमाश मारने के लिए दौड़ा रहे थे। उनका कहना था कि बच्चे ने स्कूटी से पाइप तोड़ दिया। बच्चा भागते हुए उनके घर आ गया था। डरा हुआ था, जिसके बार उनके भाई संतोष मिश्रा (शिक्षक) भी घर से बाहर निकले। उन्होंने उन्हें ऐसा करने से मना किया। वहीं कुछ देर तक दोनों पक्षों के बीच विवाद चलता रहा। लेकिन बाद में विवाद शांत हो गया था।

सुबह लगाई आग: घटना के अगले दिन सुबह करीब 4 से 5 बजे के बीच उनके घर के पास ही खड़ी उनकी कार को किसी ने आग लगा दी। कार पूरी तरह जलकर खाक हो गई। कार में उनके कुछ दस्तावेज भी थे जो जल गए। वहीं राकेश मिश्रा ने इसकी खबर फौरन पुलिस को दी।

जांच में जुटी पुलिस: राकेश ने बताया कि उन्हें शक है कि एक दिन पहले जिनके साथ विवाद हुआ था वे ही कार में आग लगाए हैं। फिलहाल गीदम पुलिस थाने में इस मामले के संबंध में लिखित शिकायत की गई है। थाना प्रभारी विजय पटेल ने कहा कि ये कृत्य करने वाला जो भी बदमाश हो उसे जल्द ही पकड़ेंगे। सीसीटीवी फुटेज खंगाल रहे हैं। अपराधियों को नहीं बख्शा जाएगा।

होली में ड्रिंक एंड ड्राइव पर ट्रैफिक पुलिस का एक्शन, 50 चौक-चौराहे पर चेकिंग के दौरान 78 लोगों पर एक्शन, 329 वाहन जब्त

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर ट्रैफिक पुलिस ने शराब पीकर गाड़ी चलाने वालों के खिलाफ लगातार कार्रवाई कर रही है। रायपुर में 50 चौक-चौराहों पर करीब 78 लोगों पर ड्रिंक एंड ड्राइव के मामले में एक्शन हुआ है। ट्रैफिक पुलिस के मुताबिक होली के दौरान अलग-अलग मामले में 329 वाहनों को जब्त भी किया गया है।

ट्रैफिक पुलिस के अधिकारियों ने बताया कि नशे की हालत में गाड़ी चलाकर कुछ लोग खुद की जान से साथ-साथ दूसरों की जान भी जोखिम में डालने का काम करते हैं। ये लोग शहर के सुगम सुरक्षित यातायात व्यवस्था में बाधा उत्पन्न करते हैं।

नशे में ड्राइविंग बनी सड़क हादसों की बड़ी वजह: सड़क हादसों के प्रकरणों का विश्लेषण करने पर ये सामने आया है कि अधिकांश दुर्घटना वाहन चालक के नशे की हालत में होने से हुआ है। सड़क दुर्घटनाओं को रोकने और यातायात को सुरक्षित बनाने के लिए रायपुर ट्रैफिक पुलिस ने विशेष चेकिंग अभियान शुरू किया है। अभियान के तहत, शहर के विभिन्न थाना क्षेत्रों, चौक-चौराहों पर नशे में वाहन चलाने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जा रही है।

कार्रवाई के दौरान ब्रेथ एनालाइजर मशीन की मदद से नशे में वाहन चलाने वालों की पहचान कर उनके खिलाफ मामला दर्ज कर उन्हें कोर्ट भेजा जा रहा है।

ट्रैफिक पुलिस ने की अपील: रायपुर ट्रैफिक पुलिस ने वाहन चालकों से अपील की है कि वे यातायात नियमों का सख्ती से पालन करें और किसी भी हाल में नशे में गाड़ी न चलाएं। नशे में गाड़ी चलाना न केवल खुद के लिए, बल्कि दूसरों की जान के लिए भी खतरा बन सकता है।

ट्रैफिक पुलिस ने चेतावनी दी है कि यदि कोई व्यक्ति नशे की हालत में वाहन चलाते पाया जाता है, तो उसे जुर्माने और कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ सकता है।

ओडिशा का बौध देश में सबसे गर्म

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में गर्मी, बारिश और बर्फबारी तीनों का असर एक साथ दिख रहा है। छत्तीसगढ़ और ओडिशा में भारी गर्मी पड़ रही है। यहां अधिकतर जिलों में तापमान 40 डिग्री के आसपास दर्ज किया गया है। ओडिशा के बौध में तापमान 42.5 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया, जो देश में सबसे ज्यादा रहा। मौसम विभाग के मुताबिक पिछले साल 5 अप्रैल को ऐसी गर्मी थी। इस बार एक महीने पहले ऐसे हालात हैं। छत्तीसगढ़ के रायपुर, बिलासपुर और दुर्ग में लू जैसे हालात हैं। 40.5 डिग्री तापमान के साथ शनिवार को बिलासपुर प्रदेश का सबसे गर्म स्थान रहा। मौसम विभाग ने 16 जिलों में यलो अलर्ट जारी किया है। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, उत्तराखंड में बारिश-बर्फबारी हुई है। हिमाचल के शिमला, कांगड़ा, लाहौल-स्पीति, कुल्लू, किन्नौर, चंबा और सिरमौर में 20 मार्च तक बारिश-बर्फबारी का दौर जारी रहेगा। पंजाब में पिछले 24 घंटों में 1.4 मिमी बारिश दर्ज की गई। आज भी बारिश का यलो अलर्ट जारी किया गया है। हरियाणा में दो दिन से कई इलाकों में बारिश, तेज हवाओं के साथ ओला वृष्टि हुई है। मौसम विभाग ने आज ओडिशा में हीटवेव का रेड अलर्ट जारी किया है। साथ ही राजस्थान समेत 14 राज्यों में बारिश का अनुमान जताया है। इसके अलावा हिमाचल प्रदेश में एवलांच की चेतावनी दी है।

तेजप्रताप के आदेश पर डांस करने वाले पुलिसकर्मी को हटाया

पटना (एजेंसी)। लालू प्रसाद के बड़े बेटे तेजप्रताप यादव के आदेश पर होली पर डांस करने वाले पुलिसकर्मी दीपक कुमार को हटा दिया गया है। उनकी जगह पर दूसरे सिपाही को तेजप्रताप का बॉडीगार्ड बनाया गया है। दरअसल, बिहार में होली के दिन 15 मार्च को तेजप्रताप यादव ने अपने आवास पर वर्दी में पुलिसकर्मी को डांस करने के लिए कहा था। तेजप्रताप ने अपने अंदाज में कहा- ठुमके लगाओ वरना सस्पेंड कर दिए जाओगे। होली के रंग में रंगे तेजप्रताप यादव बिना हेलमेट पहले स्कूटी से सीएम आवास के बाहर पहुंचे और कहा- ए पलटू चाचा, हैप्पी होली! इस मामले में भी कार्रवाई हुई है। बिना हेलमेट जिस स्कूटी को तेजप्रताप चला रहे थे उसका 4000 रुपए का चालान भी कटा गया है। गाड़ी का इंश्योरेंस और पॉल्यूशन फेल था। बिना हेलमेट गाड़ी चलाने का 1000 रुपए, पॉल्यूशन का 1000 रुपए और इंश्योरेंस फेल का 2000 रुपए का चालान भेजा गया है।

खालिस्तान समर्थक अमृतपाल के 7 साथियों को पंजाब लाया जाएगा

अमृतसर (एजेंसी)। खालिस्तानी संगठन वारिस पंजाब दे के प्रमुख और खडूर साहिब से सांसद अमृतपाल सिंह के 7 साथियों को जल्द ही पंजाब लाया जाएगा। पंजाब सरकार ने इन सभी पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (ह्र) जारी रखने से इनकार कर दिया है। कल से अमृतपाल सिंह के साथियों को पंजाब लाने की प्रक्रिया को शुरू कर दिया जाएगा। जानकारी के मुताबिक, अमृतपाल सिंह और साथी पप्पलप्रीत सिंह अभी डिब्रूगढ़ जेल में ही रहेंगे, क्योंकि पंजाब एंड हरियाणा हाईकोर्ट में चल रही उनकी एनएसए की अगली सुनवाई 22 मार्च को होनी है, जिसके बाद सरकार आगे का फैसला लेगी।

सिंहस्थ-2028 के भव्य आयोजन के लिये कृत-संकल्पित हैं हम-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने होली के पावन अवसर पर उज्जैन में कालिदास अकादमी परिसर में नागरिकों के साथ फूलों की होली खेली। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शुक्रवार देर रात अमृत 2.0 मिशन अंतर्गत शहर के विभिन्न वार्डो तथा सिंहस्थ क्षेत्र में 476 करोड रुपए लागत के सीवरेज कार्यों का भूमि-पूजन किया। इससे 3 लाख से अधिक की आबादी लाभान्वित होगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हम उज्जैन के गौरव में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए सदैव प्रयासरत है। हम भाग्यशाली हैं जो उज्जैन जैसा स्वर्ग हमें मिला है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आने वाले सिंहस्थ-2028 के भव्य आयोजन के लिए हम कृत-संकल्पित हैं। इसके अंतर्गत 2329 करोड़ के कार्य किये जा रहे हैं। जल संसाधन विभाग के 2533 करोड़ रुपए के तीन, ऊर्जा विभाग के 329 करोड रुपए के 6 कार्य किये जा रहे हैं। 9650 करोड़ रुपए के टू लेन तथा फोर लेन सड़क निर्माण किये जा रहे हैं। पर्यटन के 382 करोड़ रुपए, संस्कृति विभाग के 259 करोड़ रुपए के काम किये जा रहे हैं। मेडिसिटी में मेडिकल कॉलेज सहित अन्य उल्लेखनीय कार्य किये जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिंहस्थ-2028 के समस्त कार्य जून 2027 में पूर्ण कर लिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि सिंहस्थ का व्यापक एवं भव्य आयोजन हम सब की जिम्मेदारी है मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उज्जैन औद्योगिक क्षेत्र में विश्व स्तरीय पेप्सीको कंपनी द्वारा वृहद स्तर की फैक्ट्री डाली जाएगी, जो आलू के चिप्स बनाएगी। उज्जैन को शीघ्र ही जू की सौगात मिलने वाली है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि

मध्यप्रदेश में देश और दुनिया भर के उद्योगपति निवेश के लिए आगे आ रहे हैं। प्रदेश में गौ-दुग्ध उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए कार्य किया जा रहा है, जो भी नागरिक घर में भी गौ-पालन करेंगे उनको शासन द्वारा बोनस दिया जाएगा। असहाय निराश्रित गौ-माता का पालन शासन द्वारा किया जाएगा। इसके लिए शहरों में 10-10 हजार क्षमता की गौ-शालाएं निर्मित की जा रही है। प्रदेश में गौ-शालाओं को प्रति गौ-माता 20 के स्थान पर अब 40 रुपए अनुदान दिया जा रहा है।

प्रदेश की केन-बेतवा, पार्वती-कालीसिंध-चंबल और ताप्ती नदी परियोजनाओं से आने वाले समय में 100 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई क्षमता में वृद्धि होगी। प्रदेश में मेट्रोपॉलिटन सिटी पर भी कार्य किया जा रहा है ।कार्यक्रम में सांसद श्री अनिल फिरोजिया, विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, महापौर श्री मुकेश टटवाल, नगर निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव, पूर्व विधायक श्री राजेंद्र भारती, श्री रामलाल यादव, श्री संजय अग्रवाल उज्जैन संभाग आयुक्त श्री संजय गुप्ता तथा बड़ी संख्या में शहर के प्रबुद्ध जन एवं नागरिक आदि उपस्थित थे।

गडकरी बोले- जो करेगा जात की बात, उसको मारूंगा लात

नागपुर (एजेंसी)। केंद्रीय रोड और ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर नितिन गडकरी अपने बयानों को लेकर हमेशा चर्चा में रहते हैं। नागपुर में शनिवार को एक कार्यक्रम के दौरान उन्होंने कहा, जो करेगा जात की बात, उसको मारूंगा कस के लात। गडकरी ने एक अल्पसंख्यक संस्थान के दीक्षांत समारोह में कहा, %मैं धर्म और जाति की बातें सार्वजनिक रूप से नहीं करता। समाज सेवा सबसे ऊपर है। चाहे चुनाव हार जाऊं या मंत्री पद चला जाए, अपने इस सिद्धांत पर अटल रहूंगा। मंत्री पद नहीं मिला तो मर नहीं जाऊंगा। गडकरी ने कहा कि हम कभी भी जाति या धर्म के आधार पर

भेदभाव नहीं करते। मैं राजनीति में हूं और यहां कई तरह की बातें होती हैं। लेकिन मैंने अपने तरीके से काम करने का फैसला किया है। मुझे इस बात की चिंता नहीं है कि कौन मुझे वोट देगा। उन्होंने कहा कि मेरे दोस्तों ने कहा कि सार्वजनिक जीवन में रहते हुए तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए था। लेकिन मैंने जीवन में इसी सिद्धांत पर चलने का निश्चय किया है। चुनाव हारने या मंत्री पद न मिलने से मैं मर थोड़े ही जाऊंगा। गडकरी ने बताया कि उन्होंने एमएलसी रहते हुए एक इंजीनियरिंग कॉलेज की अनुमति अंजुमन-ए-इस्लाम संस्थान (नागपुर) को ट्रांसफर कर दी थी। उन्हें लगा कि मुस्लिम समुदाय को इसकी ज्यादा जरूरत है। उन्होंने कहा कि अगर मुस्लिम समुदाय से ज्यादा इंजीनियर, आईपीएस और आईएएस अफसर बनेंगे तो सबका विकास होगा। गडकरी बोले, हमारे पास पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का उदाहरण है। आज अंजुमन-ए-इस्लाम के बैनर तले हजारों छात्र इंजीनियर बन चुके हैं। अगर उन्हें पढ़ने का मौका नहीं मिलता, तो कुछ नहीं हो पाता। शिक्षा की यही ताकत है।

महाराष्ट्र विधान परिषद उपचुनाव के लिए भाजपा ने घोषित किए तीन उम्मीदवार

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी ने रविवार को महाराष्ट्र विधान परिषद की पांच सीटों पर होने वाले उपचुनाव के लिए तीन उम्मीदवारों के नामों की घोषणा की। भाजपा ने विधान परिषद उपचुनाव के लिए नागपुर के पूर्व मेयर और फडणवीस के करीबी संदीप दिवाकर राव जोशी, राज्य भाजपा इकाई के महासचिव संजय किशनराव केनेकर और पूर्व विधायक दादाराव यादवराव केचे के नामों की घोषणा की है। बता दें, राज्य विधान परिषद की पांच सीटों के लिए 27 मार्च को उपचुनाव होने वाले हैं। नवंबर 2024 के विधानसभा चुनाव में पांच विधान पार्षदों की जीत के कारण उपचुनाव की जरूरत पड़ी है। विधानसभा में पहुंचे विधान पार्षदों में से तीन भाजपा से हैं, जबकि एक-एक विधायक शिवसेना और राकांपा से हैं। तीनों ही दल राज्य में सत्तारूढ़ 'महायुति' का हिस्सा हैं। नामांकन दाखिल किए जाने की अंतिम तिथि 17 मार्च है। नामांकन पत्रों की जांच की अंतिम तिथि 18 मार्च है, जबकि उम्मीदवार 20 मार्च को अपना नाम वापस ले सकते हैं। 27 मार्च को मतदान होगा, जिसमें विधायक निर्वाचक मंडल का हिस्सा होंगे। विधान परिषद सदस्यों का यह उपचुनाव 288 सदस्यीय विधानसभा में विधायक कोटे से हो रहा है। भाजपा के पास 132, शिवसेना के पास 57 और राकांपा के पास 41 विधायक हैं।

मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य अरविंद सिंह का निधन

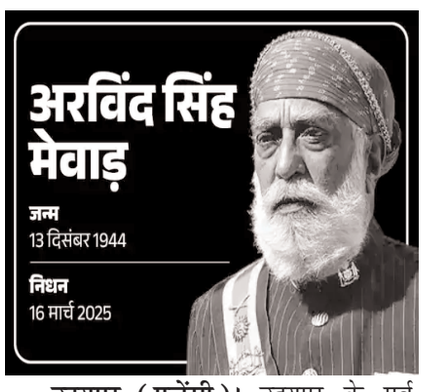

उदयपुर (एजेंसी)। उदयपुर के पूर्व राजपरिवार के सदस्य अरविंद सिंह मेवाड़ (80) का निधन हो गया। वे लंबे समय से बीमार थे। सिटी पैलेस के शंभू निवास में वे रहते थे और यहीं उनका इलाज भी हो रहा था। महाराणा प्रताप के वंशज अरविंद सिंह मेवाड़ के पिता भगवत सिंह मेवाड़ और माता सुशीला कुमारी मेवाड़ थे। उनके बड़े भाई महेन्द्र सिंह मेवाड़ का निधन पिछले साल 10 नवंबर 2024 को हुआ था। पूर्व महाराणा भगवत सिंह ने साल 1963 से लेकर 1983 तक पूर्व राजपरिवार की कई प्रॉपर्टी को लीज पर दे दिया था। पिता के इसी फैसले से नाराज होकर बड़े बेटे महेंद्र सिंह मेवाड़ ने उन पर कोर्ट में सूट (केस) फाइल कर दिया। महेंद्र सिंह ने कोर्ट में कहा कि रूल ऑफ प्रोइमोजेनीचर प्रथा को छोड़कर पैतृक संपत्तियों को सब में बराबर बांटा जाए। दरअसल, रूल ऑफ प्राइमोजेनीचर आजादी के बाद लागू हुआ था, इसका मतलब था कि जो परिवार का बड़ा बेटा होगा, वो राजा बनेगा। स्टेट की सारी संपत्ति उसी के पास होगी। अपने बेटे द्वारा केस फाइल करने से भगवत सिंह नाराज हो गए। भगवत सिंह ने बेटे के केस पर कोर्ट में जवाब दिया कि इन सभी प्रॉपर्टी का हिस्सा नहीं हो सकता। ये इम्पोर्टेबल एस्टेट यानी अविभाज्य है।

संगीतकार ए आर रहमान अस्पताल में भर्ती

नई दिल्ली (एजेंसी)। संगीतकार ए आर रहमान को शरीर में पानी की कमी के कारण यहां एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है और उनकी हालत ठीक है। रहमान के परिवार ने रविवार को यह जानकारी दी।

रहमान की बहन ए आर रेहाना ने 'पीटीआई-वीडियो' से कहा, ''उन्हें पानी की कमी और पाचन संबंधी समस्या थी।'' सूत्रों ने बताया कि ऑस्कर विजेता संगीतकार रहमान (58) को बीती रात अस्पताल में भर्ती कराया गया। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने कहा कि

उन्होंने अस्पताल के चिकित्सकों से बात कर रहमान के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली। स्टालिन ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा, ''उन्होंने मुझे बताया है कि वह ठीक हैं और जल्द ही घर लौटेंगे।

भाषा थोपने या उसका अंधाधुंध विरोध करने से राष्ट्रीय एकजुटता नहीं हासिल होगी-पवन कल्याण

नई दिल्ली (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने शनिवार को कहा कि न तो किसी को जबरन थोपने और न ही उसका अंधाधुंध विरोध करने से राष्ट्रीय और सांस्कृतिक एकजुटता हासिल होती है।

अभिनेता से नेता बने कल्याण ने कहा कि उन्होंने ''कभी हिंदी का विरोध नहीं किया'' बल्कि उन्होंने केवल ''इसे अनिवार्य बनाने का विरोध किया है।'' जनसेना पार्टी के प्रमुख ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक

पोस्ट में कहा, ''किसी को जबरन थोपना या फिर उसका अंधाधुंध विरोध करना, दोनों ही हमारे भारत में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक एकजुटता के उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद नहीं करते हैं।'' उन्होंने कहा कि चूंकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में हिंदी को अनिवार्य नहीं किया गया है, इसलिए ''इसे लागू करने के बारे में झूठी बातें फैलाना केवल जनता को गुमराह करने का एक प्रयास है।''

कल्याण के अनुसार, एनईपी 2020 के तहत छात्रों को एक विदेशी के साथ-साथ अपनी मातृसहित कोई भी दो भारतीय भाषाएं सीखने की सुविधा है। उन्होंने कहा, ''यदि वे हिंदी नहीं पढ़ना चाहते तो वे तेलुगु, तमिल, मलयालम, कन्नड़, मराठी या भारत की कोई भी अन्य चुन सकते हैं।

वोटर आईडी-आधार लिंकिंग की अनिवार्यता पर 18 मार्च को बैठक

नई दिल्ली (एजेंसी)। वोटर आईडी डेटा में गड़बड़ी के आरोप के चलते चुनाव आयोग ने 18 मार्च को एक अहम बैठक बुलाई है। इसमें वोटर आईडी को आधार से लिंक करने को अनिवार्य करने पर चर्चा हो सकती है। इस बैठक में केंद्रीय गृह सचिव, यूआईडीएआई के सीईओ और लेजिसलेटिव सेक्रेटरी शामिल होंगे। वर्तमान में वोटर आईडी और आधार लिंक करना ऑप्शनल (वैकल्पिक) है। सरकार ने संसद में स्पष्ट किया है कि अगर कोई मतदाता अपने वोटर कार्ड को आधार से लिंक नहीं करता है, तो भी उसका नाम मतदाता सूची से नहीं हटेगा। दिसंबर 2021 में लोकसभा ने चुनाव कानून (संशोधन) विधेयक पारित किया था, जिसमें वोटर आईडी को आधार से जोड़ने की सिफारिश की गई थी। चुनाव आयोग के अनुसार, अब तक 64 करोड़ मतदाता अपने वोटर आईडी कार्ड को आधार से लिंक करा चुके हैं, जबकि देश में कुल 97 करोड़ मतदाता हैं। हालांकि आधार लिंकिंग को लेकर कई एक्स्पर्ट्स और राजनीतिक दलों ने प्राइवेसी से जुड़ी चिंताएं जाहीर की है। उनका कहना है कि आधार जैसी संवेदनशील जानकारी को वोटर आईडी से जोड़ने से डेटा लीक का खतरा हो सकता है। जरूरत की खबर- क्या आप आधार कार्ड नंबर भूल गएकैसे करें चेक, जानें आधार कार्ड को लेकर क्या सावधानियां बरतना जरूरी आज के दौर में आधार कार्ड एक यूनिक ढ्ढष्ठ बन गया है। सरकारी, गैर-सरकारी कामों से लेकर मोबाइल सिम खरीदने तक इसका इस्तेमाल होता है। आधार कार्ड में 12 अंकों का एक यूनिक नंबर होता हैश् जो सिर्फ एक बार ही जारी होता है। कई बार ऐसा होता है कि आधार कार्ड कहीं खो जाता है या उसे रखकर भूल जाते हैं। ऐसे में लोग बेवजह घबराने लगते हैं। जबकि आप बिना आधार नंबर के भी अपना ई-आधार डाउनलोड कर सकते हैं।

उद्धव की शिवसेना बोली-भारत को हिंदू पाकिस्तान बनाया जा रहा हैं

मुंबई (एजेंसी)। शिवसेना उद्धव के मुखपत्र सामना में पीएम नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह पर गंभीर आरोप लगाए हैं। मुखपत्र में लिखा गया- मोदी-शाह का राज एक दिन जाएगा, लेकिन जाते-जाते वह देश को टुकड़ों में बांटकर जाएंगे। सामना में लिखा गया है कि पिछले दस सालों में भारत में हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र बन गए हैं। यह माहौल बंटवारे जैसा है। शिवाजी के इतिहास को बदलना, हिंदू-मुसलमानों के लिए अलग दुकानों की मांग करना। सामना में लिखा- यह सब एक सोची-समझी मूर्खता है, जो भारत को हिंदू पाकिस्तान की ओर धकेल रही है। देश में आज जो सांप्रदायिक और धार्मिक नफरत बढ़ी है, वह यूपी बंटवारे' से पहले भी इसी तरह दिखाई दे रही थी। आज यहां के कुछ हिंदू नेता जिन्ना की भूमिका में आ गए हैं ।यह देश के लिए खतरनाक है। भारत में सावरकर ने द्वि-राष्ट्र सिद्धांत प्रस्तुत किया था। उनका कहना था- भारतीय

मुसलमान और भारतीय हिंदू दो अलग-अलग राष्ट्र हैं। उनके अपने अलग धर्म, परंपराएं और रीति-रिवाज हैं। इसलिए सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से मुसलमानों को हिंदू बहुल भारत से बाहर अपनी अलग मातृभूमि बनाने का अधिकार होना चाहिए।

डॉ. आंबेडकर ने भी एक बार कहा था, क्यहां हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र के रूप में रहते दिखाई दे रहे हैं।'

पंडित नेहरू समझदार व्यक्ति थे, उन्होंने खुलकर कहा था, क्देश का संविधान धर्मनिरपेक्ष ही रहेगा। मैं भारत को हिंदू पाकिस्तान नहीं बनने दूंगा।'

धर्म के आधार पर बने कई राष्ट्र टूटकर बिखर गए हैं। इसमें पाकिस्तान भी शामिल है। पंडित नेहरू जैसे लोगों ने इस देश को हिंदू पाकिस्तान नहीं बनने दिया, इसलिए यह देश बचा रहा। मोदी युग में देश को फिर से एक नए बंटवारे की ओर धकेला जा रहा है। क्या हम हिंदू पाकिस्तान की ओर बढ़ रहे हैं?मुसलमानों की कमियां निकालकर उन्हें भड़काने का एक राष्ट्रीय कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जो चौंकाने वाला है। दुबई में भारत बनाम न्यूजीलैंड चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल मुकाबले में भारत विजयी हुआ।

इसके बाद कई जगहों पर भाजपा समर्थकों ने जीत का जश्न मनाते हुए मोर्चे निकाले।

असम के मुयमंत्री पुलिस का 'दुरुपयोग' कर रहे हैं : गौरव गोगोई

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस की असम इकाई के प्रवक्ता रीतम सिंह की शनिवार को सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर हुई गिरफ्तारी के बाद पार्टी नेता गौरव गोगोई ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा राज्य पुलिस बल का 'दुरुपयोग' कर रहे हैं। उ

उन्होंने असम के दौरे पर आए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से पूछा कि क्या उन्हें ऐसी गतिविधियों के बारे में पता है। गोगोई ने 'एक्स' पर लिखा, लखीमपुर पुलिस की एक टीम कांग्रेस प्रवक्ता रीतम सिंह को हिरासत में लेने के लिए गुवाहाटी आई है। जब मैं उनके (सिंह) आवास पर गया, तो मैंने देखा कि कैसे उन्हें बेरहमी से घसीटा गया और मुझसे बात नहीं करने दी गई। उन्होंने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री असम में एक पुलिस अकादमी का उद्घाटन करने आए हैं। गोगोई ने कहा, मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या उन्हें (अमित शाह को) मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा सरकार में पुलिस के दुरुपयोग के बारे में पता है। क्या गृह मंत्री अमित शाह को पता है कि कुछ दिन पहले भाजपा के गुंडों ने असम के दो कांस्टेबलों की दिनदहाड़े बेरहमी से पिटाई की थी और फिर भी उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया।कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री 'पुलिस को अवैध गतिविधियों को अपनाने के लिए मजबूर कर रहे हैं, जो कानून और उच्च न्यायालय के विपरीत हैं'। उन्होंने कहा, हिमंत विश्व शर्मा की राजनीतिक मंशा से पुलिस अधिकारियों का 'ट्रैक रिकॉर्ड' खराब हो रहा है। जनता देख रही है। लखीमपुर के पुलिस अधीक्षक मिहिरजीत गायन ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि सिंह को दो दिन पहले 'एक्स' पर एक पोस्ट के लिए भाजपा विधायक मानब डेका की पत्नी की शिकायत के बाद गिरफ्तार किया गया था।

उन्होंने बताया, हमने उन्हें कानून की प्रासंगिक धाराओं के तहत गिरफ्तार किया है। उन्हें अब लखीमपुर लाया जा रहा है। सिंह ने 13 मार्च को 'एक्स' पर पोस्ट किया था, जिसमें वर्ष 2021 में धेमाजी जिले में दुष्कर्म के एक मामले में अदालत द्वारा तीन लोगों को दोषी ठहराए जाने की खबर का जिक्र था।

आईपीएल के इन तीन खिलाड़ियों की इंजरी पर आया अपडेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 का जल्द ही आगाज होगा। टूर्नामेंट का पहला मुकाबला 22 मार्च को खेला जाएगा। लेकिन इस सीजन में तीन ऐसे खिलाड़ी हैं जिनके खेलने को लेकर संशय बना हुआ है। हालांकि, अब अपडेट मिल गया है। मुंबई इंडियंस के घातक तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह चोट के कारण से मैदान से दूर हैं। लखनऊ सुपर जायंट्स के तेज गेंदबाज मयंक यादव भी पीठ में दिक्कत के कारण से परेशान हैं। कुछ इस तरह की स्थिति संजू सैमसन की भी है।

संजू सैमसन

राजस्थान रॉयल्स के कप्तान और विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के दौरान चोटिल हो गए थे। इसके बाद उनके अंगूठे की सर्जरी हुई थी। सैमसन फिलहाल ठीक हैं। वे राजस्थान रॉयल्स के लिए आने वाले सीजन में खेल सकते हैं। सैमसन नेशनल क्रिकेट एकेडमी में हैं जहां वो प्रैक्टिस कर रहे हैं।

जसप्रीत बुमराह

मुंबई इंडियंस के बेहतरीन गेंदबाज जसप्रीत बुमराह कई मौकों पर टीम के लिए कमाल दिखा चुके हैं। लेकिन वे ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट सीरीज के दौरान चोटिल हो गए थे। बुमराह की पीठ में दिक्कत थी। वे फिट न होने के कारण से ही चैंपियंस ट्रॉफी 2025 से बाहर हो गए थे। अब वे आईपीएल 2025 में भी देरी से एंट्री ले सकते हैं। बुमराह

फिलहाल पूरी तरह से फिट नहीं हुए हैं। हालांकि इसे लेकर अभी तक आधिकारिक जानकारी नहीं मिली है।

मयंक यादव

लखनऊ सुपर जायंट्स के घातक गेंदबाज मयंक यादव ने कम समय में काफी नाम कमा लिया है। उनकी स्पीड की वजह से काफी चर्चा हुई। लेकिन मयंक पिछले सीजन के दौरान चोट के कारण से टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे। मयंक फिलहाल नेशनल क्रिकेट एकेडमी बैंगलोर में हैं। वे वहां आवेश खान और मोहसिन खान के साथ खुद पर काम कर रहे हैं। फिलहाल मयंक की वापसी को लेकर आधिकारिक जानकारी नहीं मिल सकती है।

रोहित शर्मा वेकेशन मनाने परिवार संग पहुंचे मालदीव

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा आईपीएल 2025 से पहले अपने परिवार के साथ मालदीव में हैं, जहां वह छुट्टियां मना रहे हैं। रोहित शर्मा हाल ही में दुबई से लोटे हैं। जहां भारत चैंपियंस ट्रॉफी खेल रहा था और न्यूजीलैंड को फाइनल में हराकर खिताब जीता है। अपनी आईपीएल टीम के साथ जुड़ने से पहले रोहित शर्मा अपनी पत्नी, बेटी और बेटे के साथ मालदीव में हॉलीडे मना रहे हैं। जिसकी तस्वीरें खुद रोहित शर्मा ने अपने सोशल मीडिया पर शेयर की हैं। रोहित शर्मा की कप्तानी में भारत ने हाल ही में चैंपियंस ट्रॉफी खिताबी जीता है। रोहित ने फाइनल में 76 रनों की मैच जिताऊ पारी खेली थी, जिसके लिए उन्हें प्लेयरऑफ द ऑवर्ड से नवाजा गया।

क्रिस गेल के नाम पर महिला से ठगे 2.8 करोड़ रुपये

नई दिल्ली (एजेंसी)। हैदराबाद की 60 वर्षीय व्यवसायी महिला ने अपने भाई सहित 6 व्यक्तियों के खिलाफ धोखधड़ी की शिकायत दर्ज दराई है। उन्हें वेस्टइंडीज के दिग्गज क्रिकेटर क्रिस गेल की फोटो और वीडियो का इस्तेमाल करके एक फर्जी कॉफी पाउडर बनाने वाली कंपनी में 2.8 करोड़ का निवेश करने का लालच दिया गया। 5.7 करोड़ रुपये की निवेश योजना में हाई रिटर्न का वादा किया गया था। इस स्कैम में उन्हें और अन्य लोगों को काफी वित्तीय नुकसान पहुंचाया है। व्यवसायी महिला से 2019 में उसके भाई और उसकी पत्नी ने संपर्क किया, जिन्होंने उसे निवेश पर 4 प्रतिशत मासिक रिटर्न देने का वादा किया। उन्होंने दावा किया कि इस पैसे का इस्तेमाल केन्या स्थिति कॉफी पाउडर बनाने वाली एक कंपनी को फंड देने के लिए किया जाएगा, जो अमेरिका में नई इकाई खोल व्यवसाय का विस्तार करने की योजना बना रही है। महिला का विश्वास जीतने के लिए आरोपी कथित तौर पर वेस्टइंडीज क्रिकेटर क्रिस गेल की तस्वीरें और वीडियो दिखाए और दावा किया कि वह प्रमोटर केरूप में इस व्यवसाय में शामिल हैं।

आईपीएल 2025 के लिए आरसीबी से जुड़े विराट कोहली

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग के 18वें सीजन का काउंटडाउन शुरू हो गया है। सभी टीमें जोरो शोरो से तैयारी कर रहे हैं। आरसीबी टीम 17 मार्च को एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में अनबॉक्स इवेंट आयोजित करने जा रही है। इससे पहले टीम में शामिल स्टार प्लेयर विराट कोहली बैंगलुर पहुंच गए हैं। इस दौरान कोहली का स्टाइलिश अंदाज देखा गया जहां वो गाड़ी से हीरो की तरह निकल रहे हैं।

दरअसल, विराट कोहली का गाड़ी से निकलने वाला वीडियो आरसीबी ने अपने सोशल मीडिया हैंडल से शेयर किया है। जिसमें आप देख सकते हों कि, कोहली ग्रे रंग के ट्रॉउजर और ब्लू रंग की शर्ट में स्टाइलिश नजर आ रहे हैं। काले रंग का चश्मा लगाए वह जब गाड़ी से उतर रहे हैं तो मानों किसी फिल्म में हीरो की एंट्री हो रही है। कोहली जल्द ही मैदान पर भी नेट प्रैक्टिस शुरू करेंगे। आईपीएल सीजन 18 से पहले कोहली चैंपियंस ट्रॉफी में खेल रहे थे, जहां पाकिस्तान के खिलाफ उन्होंने नाबाद शतकीय पारी खेली थी। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल मैच में उन्होंने 84 रनों की पारी खेली थी, जिसके लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया था। उनका फॉर्म लौटा हुआ नजर आ रहा है, जो आरसीबी के लिए अच्छी खबर है। आईपीएल को लेकर भी कोहली ने अन्य टीमों को अपने बयान से चेतावनी दी है।

भारतीय सिनेमा में डेविड वॉर्नर इस फिल्म से कर रहे डेब्यू

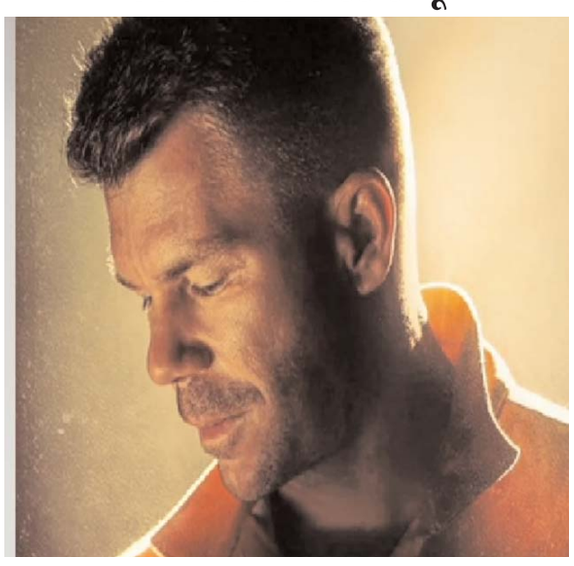

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर डेविड वॉर्नर भारतीय सिनेमा में अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत करने जा रहे हैं। वह रॉबिनहुड फिल्म में कैमियो करते हुए दिखेंगे। फिल्स से उनका फर्स्ट लुक सामने आया है। वॉर्नर अपने एक्टिंग करियर को लेकर काफी उत्साहित हैं। भारतीय दर्शकों को भी इस फिल्म का इंतजार है। वॉर्नर ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर रॉबिनहुड फिल्म में अपने लुक को शेयर किया है। उन्होंने बताया कि उन्होंने इस फिल्म की शूटिंग को खूब एन्जॉय किया। उन्होंने लिखा कि, भारतीय सिनेमा, मैं यहां आ गया हूं। रॉबिनहुड का हिस्सा होने को लेकर काफी उत्साहित हूं। मैंने इस फिल्म की शूटिंग का खूब आनंद लिया। डेविड वॉर्नर ने अपने पोस्ट में ये भी खुलासा किया है कि रॉबिनहुड फिल्म कब रिलीज होगी? उन्होंने लिखा कि ये फिल्म वर्ल्डवाइड 28 मार्च को रिलीज होगी। डेविड वॉर्नर भारत और भारतीय सिनेमा से काफी लगाव रखते हैं। जब वह आईपीएल के दौरान यहां आते हैं तब भी खूब एन्जॉय करते हैं। वह कई बार भारत को अपना दूसरा घर बोल चुके हैं। वॉर्नर सोशल मीडिया पर अक्सर टॉलीवुड और बॉलीवुड गानों पर रील बनाकर शेयर करते हैं। तेलुगु फिल्म रॉबिनहुड में लीड रोल में फेमस एक्टर नितिन नजर आएंगे। वह एक चोर के किरदार में होंगे, जो गरीबों की मदद करने के लिए अमीरों को लुटता है। फिल्म की कहानी हनी के इर्द-गिर्द घूमती है, जो बिना किसी व्यक्तिगत एजेंडे के, केवल साहस और निडरता से प्रेरित होकर कई डकैती डालता है।

रोहित शर्मा की टेस्ट कप्तानी पर बड़ा फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। रोहित शर्मा की अगुवाई में भारत ने हाल ही में चैंपियंस ट्रॉफी 2025 जीती। जिस कारण उनकी टेस्ट कप्तानी को भी जीवनदान मिला है। बताया जा रहा है कि जून से अगस्त के बीच इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों की सीरीज में रोहित शर्मा ही कप्तान होंगे। बता दें कि, ऑस्ट्रेलिया दौरे पर टेस्ट सीरीज में भारत का प्रदर्शन काफी खराब था। इसके बाद रोहित शर्मा की कप्तानी पर सवाल उठने लगे थे। यहां तक कि आखिरी टेस्ट में रोहित ने खुद को टीम से बाहर कर लिया था। इस टेस्ट में जसप्रीत बुमराह ने भारत की कमान संभाली थी। अब चैंपियंस ट्रॉफी में जीत के बाद रोहित को बीसीसीआई का पूरा समर्थन मिला है। इंडियन एक्सप्रेस के मुताबिक बोर्ड और चयनकर्ता रोहित को एक और बड़े टूर पर बतौर कप्तान भेजने का फैसला किया है। बोर्ड का कहना है कि रोहित ने साबित कर दिया है कि वह क्या कर सकते हैं। हर किसी को लगता है कि इंग्लैंड दौरे पर भारत का नेतृत्व करने के लिए रोहित सबसे उपयुक्त हैं। रोहित ने भी अभी रेड बॉल क्रिकेट खेलने की इच्छा जताई है। इससे पहले आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी जीतने के बाद रोहित ने खुद कहा था कि वह रिटायर नहीं होने जा रहे हैं। हालांकि, जब उनसे 2027 के वनडे वर्ल्ड कप के बारे में पूछा गया तो उन्होंने अपनी योजना का खुलासा नहीं किया था।

अक्षर पटेल के दिल्ली कैपिटल्स का कप्तान बनने पर केएल राहुल दिया ऐसा रिए शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 शुरू होने में अब बस कुछ ही दिन शेष हैं। टूर्नामेंट शुरू होने से कुछ दिन पहले दिल्ली कैपिटल्स ने अपने कप्तान के रूप में अक्षर पटेल के नाम का एलान कर दिया है।

हालांकि, पहले संभावना जताई जा रही थी कि फ्रेंचाइजी अपने कप्तान के रूप में केएल राहुल को चुन सकती है, जो पंजाब किंग्स और लखनऊ सुपज जायंट्स की कमान संभाल चुके हैं। अक्षर पटेल के कप्तान नियुक्त होने के बाद दिल्ली में शामिल केएल राहुल का पहला रिएक्शन आया है। बाएं हाथ के ऑलराउंडर अक्षर पटेल 2019 में दिल्ली कैपिटल्स के साथ जुड़े थे। तब से लेकर वह टीम के लिए 82 मैच खेल चुके हैं। उन्हें टीम ने आईपीएल 2025 के लिए 16.50 करोड़ रुपये में रिटेन किया था। टीम के कप्तान ऋषभ पंत को रिलीज कर दिया गया था और फ्रेंचाइजी ने उन्हें ऑक्शन में खरीदने में कोई रुचि भी नहीं दिखाई। ऑक्शन में टीम ने केएल राहुल को 14 करोड़ रुपये में खरीदा था। जो पंजाब और लखनऊ के लिए कप्तानी कर चुके हैं।

मुंबई की साइवर-ब्रंट के नाम हो सकती है ऑरेज कैप

नई दिल्ली (एजेंसी)। आज मुंबई इंडियंस और दिल्ली कैपिटल्स के बीच वीमेंस प्रीमियर लीग का फाइनल मैच खेला जाएगा। ये मुकाबला समयानुसार शाम 7.30 बजे से शुरू होगी। मुंबई की नट साइवर-ब्रंट ने पूरे सीजन के दौरान शानदार बैटिंग करके मुंबई टीम को मुश्किल परिस्थितियों से उबारा है। ब्रंट अभी 492 रन बनाने के साथ ऑरेंज कैप की रेस में सबसे आगे चल रही हैं। अगर उन्हें ऑरेज कैप मिल जाती है तो उन्हें इनाम के रूप में प्राइज मनी मिलेगी।

ऑरेंज कैप की रेस में अभी मुंबई इंडियंस की नट साइवर-ब्रंट सबसे आगे हैं। उन्होंने 9 पारियों में अब तक 493 रन बना लिए हैं। सीजन में उनका औसत 70.43 का रहा है और अभी तक टूर्नामेंट में कुल 5 अर्धशतक लगा चुकी हैं। अगर ब्रंट ऑरेंज कैप जीत जाती हैं तो उन्हें प्राइज मनी के रूप में 5 लाख रुपये मिलेंगे। बताते चलें कि पर्पल

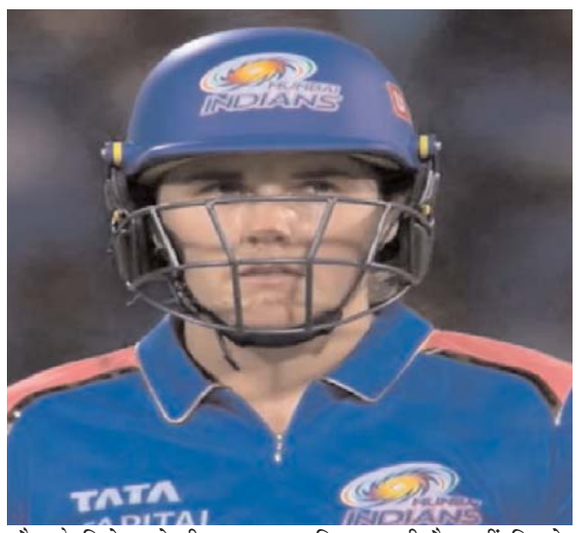

कैप के विजेता को भी 5 लाख रुपये का ईनाम मिलता है। ऑरेंज कैप और पर्पल कैप के विजेता को एक ट्रॉफी के साथ-साथ 5 लाख रुपये दिए जाते हैं। पिछले वर्ष की बात करें तो डब्ल्यूपीएल 2025 की विजेता रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को 6 करोड़ रुपये की प्राइज मई मिली थी। लेकिन इस बार भी चैंपियन टीम को 6 करोड़ रुपये की प्राइज मनी मिल सकती है। वहीं पिछले साल रनर-अप टीम को 3 करोड़ रुपये मिले थे। बता दें कि, वीमेंस प्रीमियर लीग 2024 में भी मुंबई इंडियंस और दिल्ली कैपिटल्स के बीच फाइनल खेला गया था। उस मैच में मुंबई ने दिल्ली को 7 विकेट से हराया था। अब उसके 2 साल बाद ष्ठष्ट को अपना बदला लेने का मौका मिलता है।

जसप्रीत बुमराह मना रहे शादी की चौथी सालगिरह

नई दिल्ली (एजेंसी)। जसप्रीत बुमराह अपनी वाइफ संजना गणेशन संग शादी की चौथी सालगिरह मना रहे हैं। इस दौरान पत्नी संजना ने बुमराह के लिए दिल छू लेने वाला मैसेज शेयर किया है। दरअसल, संजना गणेशन ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी के जरिए बताया है कि वह अपनी शादी की चौथी सालगिरह मना रहे हैं। आज टीम इंडिया के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह अपनी वाइफ संजना गणेशन संग शादी की चौथी सालगिरह मना रहे हैं। इस दौरान पत्नी संजना ने बुमराह के लिए दिल छू लेने वाला मैसेज शेयर किया है। दरअसल, संजना गणेशन ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी के जरिए बताया है कि वह अपनी शादी की चौथी सालगिरह मना रहे हैं। इस पोस्ट के कैप्शन में उन्होंने बॉलीवुड सॉन्ग, %तू ही तो है%का लिरिक्स शेयर किया है।

जब वरुण चक्रवर्ती को मिली जान से मारने की धमकी

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में बेहतरीन गेंदबाजी करके टीम इंडिया की जीत में अहम भूमिका निभाने वाले वरुण चक्रवर्ती का ताजा खुलासा चौंकाने वाला है। दरअसल, वरुण का कहना है कि 2021 में टी20 वर्ल्ड कप में उनका प्रदर्शन जोरदार नहीं था तो उनको फोन पर धमकी भरे कॉल आए थे।

वरुण ने कहा कि टीम इंडिया का तब सफर जल्दी खत्म हो गया था, तब उनको लगा था कि अब शायद उनका इंटरनेशनल क्रिकेट करियर खत्म हो गया है। ध्यान रहे वरुण का टी20 डेब्यू जुलाई 2021 में श्रीलंका के खिलाफ सीरीज से हुआ था। उसके बाद उनका चयन विराट कोहली के नेतृत्व वाली टी20 वर्ल्ड कप के लिए टीम में किया गया था।

वरुण ने तब उस टूर्नामेंट के दौरान कुल 3 मैच खेले थे, लेकिन वो एक भी विकेट नहीं ले पाए थे। वरुण तब दुबई में भारत की 10 विकेट से पाकिस्तान से मिली

पाकिस्तान से हार वाली टीम के भी सदस्य थे। जो किसी भी वर्ल्ड कप में भारत की पाकिस्तान से पहली हार थी।

वरुण ने यूट्यूब शो में मशहूर एंकर गोबीनाथ से कहा कि, ये मेरे लिए एक बुरा समय था। मैं डिप्रेशन में था क्योंकि मुझे लगा कि मैं वर्ल्ड कप के लिए चुने जाने के बाद जस्टिस नहीं कर पा रहा हूं। मुझे एक भी विकेट नहीं ले पाने का अफसोस था। उसके बाद तीन साल तक मेरा सेलेक्शन नहीं हुआ, इसलिए मुझे लगा कि टीम में वापसी मेरे डेब्यू से कहीं ज्यादा कठिन थी।

चक्रवर्ती ने आगे कहा कि, मुझे अपने बारे में बहुत कुछ बदलना पड़ा। मुझे अपना रूटीन, प्रैक्टिस बदलना पड़ी। पहले मैं एक सत्र में 50 गेंदों का अभ्यास करता था, मैंने इसे दोगुना कर दिया। बिना ये जाने कि सेलेक्टर मुझे वापस बुलाएंगे या नहीं। ये मुश्किल था। तीसरे साल के बाद मुझे लगा कि सब खत्म हो गया है। हमने आईपीएल जीता और फिर मुझे कॉल आया उसके बाद मैं बहुत खुश था।

उन्होंने कहा कि, तब 2021 वर्ल्ड कप के बाद मुझे धमकी भरे कॉल आए थे। कहा गाया कि भारत मत आना। लोग मेरे घर आए, मुझे ढूंढ़ने लगे- मुझए कई बार छिपना पड़ा। जब मैं एयरपोर्ट से लौट रहा था तो कुछ लोग अपनी बाइक पर मेरा पीछा कर रहे थे।

मऊगंज हत्याकांड: भोपाल से आई आई बी की टीम ने भी किया घटनास्थल का निरीक्षण

युवक की हत्या को छिपाने आदिवासियों ने एएसआई की भी ली जान, मौके पर पहुंचे डीजीपी ने घंटों तक की लोगों से बातचीत

मीडिया ऑडीटर, रीवा/मऊगंज (निप्र)। जिले के शाहपुर थाना क्षेत्र के गडरा गांव में शनिवार को 2 महीने पूर्व हुई आदिवासी की मौत को लेकर बवाल मच गया जिसमें एक युवक की जान चली गई वहीं आरोपियों ने उसकी हत्या को छिपाने के लिए घटना की तफ्तीश करने पहुंचे पुलिसकर्मियों पर भी हमला कर दिया जिससे घटना में पुलिस के जवान राम चरण गौतम की मौत हो गई इसके अलावा पुलिसकर्मियों पर हुए हमले में करीब आधा दर्जन पुलिस के कर्मचारी घायल हुए हैं और घटना में हनुमना के तहसीलदार के ऊपर भी हमला हो गया जिसमें उन्हें गंभीर चोटें आई हैं। जिसके बाद पुलिस की टीम ने बढ़ रहे विवाद को नियंत्रित करने के लिए गांव को छावनी में तब्दील कर दिया और विवाद को शांत कराया जिसपर रविवार को घटना की समीक्षा के मध्य प्रदेश के डीजीपी कैलाश मकवाना मऊगंज पहुंचे जहां पर उन्होंने घंटों तक घटना में मृत हुए युवक शनि द्विवेदी के परिजनों से बातचीत की तथा आरोपियों से भी पूंछताछ की वहीं भोपाल से आई आईबी की टीम ने भी घटना स्थल का निरीक्षण किया।

दरअसल 2 माह पूर्व गडरा गांव के ही रहने वाले अशोक कोल की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी जिसको लेकर अशोक के परिजनों ने शनि द्विवेदी पर हत्या की आशंका जाहिर की थी तब मऊगंज के एडिशनल एसपी ने घटना की जांच की जिसमें निकलकर आया कि असल में अशोक की मौत एक दुर्घटना थी परन्तु अशोक के परिजनों ने गांव के ही रहने वाले शनि द्विवेदी को उसका खूनी समझते हुए बदला लेने की कोशिश शुरू कर दी। जिसके बाद शनिवार को होली के ठीक दूसरे दिन दोपहर के वक्त शनि द्विवेदी उसी अशोक आदिवासी परिवार की दुकान पर समान लेने गया था जिसकी मौत का आरोप परिजनो ने सनी द्विवेदी पर लगाया था. इसी बीच आदिवासी परिवार के लोगो ने शनि को किराने की दुकान पर ही बंधक बना लिया इसकी सूचना शनि के परिजनों को हुई तो वह आदिवासी परिवार से बातचीत करने पहुंचे तभी आदिवासी परिवार के लोगो ने उन्हें भगा दिया जिसपर परीजनो ने पुलिस को घटना की सूचना दी तब मौके पर तहसीलदार कुमरे लाल पनिका, एसडीओपी अंकिता सूल्या. शाहपुर थाना प्रभारी संदीप भारतीय, सहित दो एएसआई अन्य पुलिस कर्मी मौके पर पहुंचे।

आरोपियों ने एसडीओपी को बनाया बंधक: बताया जा रहा है कि एसडीओपी अंकिता सूल्या ने जब बंधक बने युवक शनि द्विवेदी को छुड़ाने के लिए दुकान के अन्दर प्रवेश किया और समझाइश दी तभी देखा की शनि द्विवेदी मृत अवस्था में पड़ा हुआ था. पुलिस के मुताबिक शनि को बंधक बनकर उसकी बेरहमी से पिटाई की गई जिससे उसकी मौत हो गई थीं इसके बाद पुलिस ने मौके से 5 लोगो को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया और तब आदिवासी परिवार के लोग उग्र हो गए और गांव के सैकड़ों आदिवासी एकत्रित हो गए. इस दौरान एसडीओपी अंकिता सूल्या को भी आरोपीयों ने उसी कमरे में कैद कर लिया जहां पर शनि द्विवेदी को बंधक बनाया गया था।

भारी फोर्स की मदद से बंधक बने अधिकारियों को कराया आजाद: स्थानीय लोगों की माने तो कमरे में कैद करके एसडीओपी अंकिता सूल्या की भी पिटाई की गई. इस दौरान तहसीलदार कुमरे लाल पनिका और शाहपुर थाना प्रभारी संदीप भारतीय सहित, एएसआई रामचरण गौतम, एएसआई बृहस्पति पटेल, पुलिस कर्मी अनंत मिश्रा, जवाहर सिंह यादव सहित अन्य पर पत्थर बाजी करते हुए लाठी और डंडे से गांव वालो ने दौड़ा दौड़ा कर पीटा. पत्थर बाजी की घटना में एएसआई रामचरण गौतम की दर्दनाक मौत हो गई. घटना की सूचना मिलते ही तत्काल पुलिस फोर्स पहुंची और बंधक बने प्रशासनिक अधिकारियो को बंधन से मुक्त करवाया वहीं गंभीर रूप से घायल तहसीलदार,एसडीओपी, और पुलिस कर्मियों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया।

गांव के सभी घरों की तलाशी लेकर खोजे गए आरोपी: इस दौरान मऊगंज कलेक्टर अजय श्रीवास्तव, एसपी रसना ठाकुर दल बल के साथ घटना स्थल पर पहुंचे. सूचना मिलते ही मौके पर डीआईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय पहुंचे और स्थिति को काबू किया देर रात पूरा गडरा गांव पुलिस छावनी में तब्दील हो गया इसके बाद रात तकरीबन 12 बजे पुलिस एक्शन मोड में आई जिसके बाद एक-एक करके सभी घरों की तलाशी लेनी शुरू की और घरों में छिपकर बैठे पत्थर बाज आरोपियों को बाहर निकाला और सैकड़ो लोगो से सख्ती के साथ पूछताछ की गई जिसके बाद पुलिस फोर्स ने तीन लोगो को हिरासत में लिया और अपने साथ थाने ले गई।

घटना स्थल पहुंचे डीजीपी ने की मृतक के परिजनों से मुलाकात

घटना के बाद रविवार को सुबह से ही गडरा गांव में भारी पुलिस बल की तैनाती कर दी गई जिससे दोबारा कोई विवाद न हो सके जिसके बाद मध्य प्रदेश के डीजीपी कैलाश मकवाना भी गडरा गांव पहुंचे और उन्होंने घटना में मृत शनि द्विवेदी के परिवारजनों से मुलाकात की जहां पर घंटों बातचीत कर मकवाना ने परिवार को ढाढस बंधाते हुए मामले में उच्च स्तरीय जांच कर कार्यवाही का भरोसा दिलाया। वहीं भोपाल से आई आईबी की टीम ने भी घटना स्थल का निरीक्षण किया है।

मुख्यमंत्री ने जताया दुख, शहीद परिवार को आर्थिक सहायता

मऊगंज जिले में कर्तव्य पालन करते हुए शहीद हुए एएसआई रामचरण गौतम का पार्थिव शरीर रविवार को उनके पैतृक गांव पवैया पुहुंचा। यहां उन्हें पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई। शहीद रामचरण गौतम भोपाल की 25वीं बटालियन में तैनात थे और वे 8 महीने बाद सेवानिवृत्त होने वाले थे। मुख्यमंत्री ने इस घटना पर दुख जताते हुये परिवार के प्रति सांत्वना व्यक्त की है। साथ ही परिवार को एक करोड़ रुपये के आर्थिक सहायता की घोषणा की है।

मऊगंज दुर्घटना में प्राणोत्सर्ग करने वाले एएसआई को दिया जाएगा शहीद का दर्जा

परिवार को एक करोड़ रुपए की सहायता और पात्र उत्तराधिकारी को शासकीय सेवा में लिया जाएगा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जिला मऊगंज के शाहपुर थाना क्षेत्र के गड़रा गांव में हुई दुर्घटना में कर्तव्य निर्वहन के दौरान अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले एएसआई (25वीं बटालियन) श्री रामचरण गौतम को शहीद का दर्जा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि स्व. गौतम के आश्रितों को एक करोड़ रुपए की सहायता राशि उपलब्ध कराई जाएगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि शहीद रामचरण गौतम के पात्र उत्तराधिकारी को शासकीय सेवा में लिया जाएगा। यह उनके बलिदान के प्रति श्रद्धा, आस्था और राज्य सरकार की परंपरा व कर्तव्य का प्रकटीकरण है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि शहीद रामचरण गौतम की कर्तव्य परायणता और उनका बलिदान चिर-स्मरणीय रहेगा। उन्होंने कहा कि दुर्घटना में घायलों के इलाज के लिए यथा योग्य व्यवस्था की जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मीडिया को जारी संदेश में यह विचार व्यक्त किए।

मुख्यमंत्री ने मऊगंज के आरोपियों पर सख्त कार्रवाई के दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मऊगंज जिले में शाहपुर थाना क्षेत्र के गड़रा गांव में दो गुटों के आपसी विवाद की सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस टीम पर हमले में पुलिस के एएसआई के शहीद होने पर दुःख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि राज्य सरकार की शोक संवेदनाएं शोकाकुल परिजनों के साथ हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने डीजी पुलिस को मौके पर पहुंचकर पर्यवेक्षण के लिए निर्देशित किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अमानवीय एवं दुर्भाग्यपूर्ण घटना के सभी आरोपियों पर सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। घटना में घायल अन्य पुलिसकर्मियों को उपचार के लिए रीवा चिकित्सालय भेजा गया है। मऊगंज जिले में शाहपुरा थाना अंतर्गत गड़रा गावं में दो गुटों के आपसी विवाद की सूचना पर पहुंचे शनिवार को क्षेत्रीय तहसीलदार,थाना प्रभारी सहित पुलिस की टीम पर हुए दुर्भाग्यपूर्ण हमले में पुलिस के एएसआई श्री रामचरण गौतम की जवाबी कार्रवाई में मृत्यु हो गई। घटना के तुरंत बाद क्षेत्र में धारा 163 लागू कर डीआईजी रीवा, एसपी मऊगंज सहित अन्य पुलिस अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित किया।

मऊगंज की घटना में मृतक रज्जन दुबे के अंतिम संस्कार में शामिल हुए प्रभारी मंत्री

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जिले के शाहपुर थानान्तर्गत गड़रा गांव में गत दिवस हुई घटना में मृतक रज्जन दुबे का आज अंतिम संस्कार किया गया। मऊगंज जिले के प्रभारी मंत्री श्री लखन सिंह पटेल अंतिम संस्कार में शामिल हुए। उन्होंने शोक संतप्त परिजनों से मुलाकात कर उन्हें सांत्वना दी तथा कहा कि आरोपियों के विरूद्ध कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाएगी। आरोपी व्यक्तियों को किसी भी हालत में बख्शा नहीं जाएगा। इस दौरान कमिश्नर रीवा संभाग बीएस जामोद, डीआईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय, कलेक्टर मऊगंज अजय श्रीवास्तव, पुलिस अधीक्षक रसना ठाकुर, एसडीएम कमलेश पुरी सहित प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

अभय मिश्रा पर सेमरिया के भाजपाइयों का निशाना, शराब छोड़ कुछ काम करें फिर गाएं झूठ का गाना

भाजपा नेताओं का आरोप बीजेपी सरकार के कामों को अपना काम बताने बस का ही काम कर रहे कांग्रेस विधायक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारतीय जनता पार्टी के नेता दिवाकर द्विवेदी पूर्व मंडल अध्यक्ष मनीष चंद शुक्ला बकिया मंडल अध्यक्ष शेषमणि पांडे सेमरिया मंडल अध्यक्ष अरुणेंद्र तिवारी शाहपुर मंडल अध्यक्ष दीपक सिंह रीवा जनपद अध्यक्ष प्रतिनिधि राजेश यादव नगर परिषद अध्यक्ष सेमरिया राजेंद्र विश्वकर्मा नगर परिषद के उपाध्यक्ष मुरलीधर शर्मा जनपद पंचायत सिरमौर के सभापति शांति नारायण पांडे जल मोहरा सिंचाई समिति के अध्यक्ष राजेंद्र द्विवेदी ने संयुक्त पत्रकार वार्ता कर भाजपा कार्यालय रीवा में कांग्रेस विधायक द्वारा भाजपा सरकार के स्वीकृत सड़कों को अपना बताकर जिस तरह से झूठी अफवाह फैलाई जा रही है उसका खंडन करते हुए कहा है कि सेमरिया विधायक अनर्गल और झूठे प्रलाप कर रहे हैं जबकि सब जानते हैं कि कांग्रेस सरकार में रीवा से गोदहा रोड को इन्हीं के इशारों पर निरस्त कर दिया गया था परंतु बीजेपी सरकार आते ही तत्कालीन विधायक केपी त्रिपाठी ने प्रयास कर कैबिनेट से इसे पुनः रीवा वापस कराया था जिसकी स्वीकृति इस बजट में हुई है प्रदेश के मुख्यमंत्री ने सेमरिया में खुलेआम कहा था कि सेमरिया के विकास को रुकने नहीं दिया जाएगा और उसको बढ़ाने के लिए पूरी मदद हमारे द्वारा की जाएगी

दिवाकर द्विवेदी ने कहा कि सेमरिया विधायक झूठ और फरेब की राजनीति करते हैं और कहते हैं कि अब हमने बैटिंग शुरू कर दी तो हमें ऐसा लगता है उनके पास ना गेंद है और ना ही बैट बल्ला है और ना ही कोई खिलाड़ी है फिर भी बैटिंग शुरू होने की बात कर रहे हैं यह सही है कि वह अपनी पारिवारिक राजनीति को बढ़ाने की बैटिंग कर रहे हैं अपनी कंपनी को बढ़ाने के लिए राजनीतिक सहारा ले रहे हैं पहली बार विधायक हुए तो जमीन हड़प ली फिर दूसरी बार करोड़ की इमारत खड़ा कर दी जनता की मूलभूत समस्याओं से उनका कोई नाता नहीं है वह सिर्फ झूठ की राजनीति और दूसरे के काम को अपना बताने की राजनीति करते हैं और वह इस बार भी कर रहे हैं जबकि सेमरिया विधायक के पास कुछ बचा नहीं है।

भाजपा नेताओं ने कहा कि कांग्रेस विधायक अपने परिवार और कंपनी तक सिमटे हुए हैं उसी को बढ़ाने के लिए उनके द्वारा बैटिंग की जा रही है सिमरिया क्षेत्र की जनता उन्हें अच्छी तरह से जानती है और वह एक्सीडेंटल विधायक बन गए हैं परंतु जनता की नजरों में आप्रासंगिक हो चुके हैं उनके पास कुछ बचा नहीं है अपना राजनीतिक अस्तित्व बचाने के लिए भाजपा सरकार के कामों को अपना बता रहे हैं।

नाकामियों को छिपाने भाजपा के काम का सहारा ले रहे हैं विधायक : भाजपा नेताओं ने कहा कि जिस तरह से सेमरिया विधायक ने कोरोना कल में दारू बेचने का काम किया है और जनता के दुख सुख से उनका कोई सरोकार नहीं रहा मध्य प्रदेश से बाहर छत्तीसगढ़ तक शराब बेचने का काम किया जा रहा था। सेमरिया को परिवारवादी नहीं विकासवादी चाहिए। भाजपा नेताओं ने एक स्वर में कहा कि सेमरिया की जनता विकास के प्रति सचेत और सजग है पूरे क्षेत्र में नित नए विकास के काम हो रहे हैं और शहरी सुविधाएं गांव-गांव में दिलाने के लिए भाजपा सरकार तेजी से कम कर रही है उसका असर है कि सेमरिया क्षेत्र हर दिशा में चौमुखी विकास के मुहाने पर खड़ा हो चुका है

बताया गया कि सेमरिया नगर पंचायत में करोड़ों की लागत से सब्जी मंडी का निर्माण हो रहा है वही 100 करोड़ से अधिक की नई सिंचाई परियोजना की स्वीकृत मिल चुकी है जिससे आने वाले समय में सिमरिया आंचल के किसान खुशहाल और कृष की क्षेत्र में बंपर उत्पादन का रिकॉर्ड भी बनाएंगे।

भाजपा नेताओं ने कहा कि कांग्रेस विधायक हमेशा सरकारी जमीन बेचने का झूठा आरोप लगाते रहते हैं परंतु पी पी मॉडल दिग्विजय सिंह के शासन में कांग्रेस पार्टी ही लेकर आई थी विकास के लिए पारदर्शी ढंग से ऑप्शन होता है जो विधायक खुद कई ऑप्शनों में सम्मिलित हो चुके हैं सरकारी जमीन के नाम सिर्फ झूठ और चल के माध्यम से लोगों को भ्रमित करने की खेती करते चले आ रहे हैं विधायक जी ने खुद ही प्राकृतिक नाले पर अवैध अतिक्रमण कर लिया है।

कमिश्नर ने एएसआई रामचरण गौतम को श्रद्धा सुमन अर्पित किए

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जिले की दुखद घटना में एएसआई रामचरण गौतम का आकस्मिक निधन हो गया। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने संजय गांधी अस्पताल पहुंचकर मृतक एएसआई रामचरण गौतम को श्रद्धा सुमन अर्पित किए तथा उनके पार्थिव शरीर को ससम्मान सतना जिले के गुलुआ पवैया गांव के लिए रवाना किया। श्री जामोद ने कहा कि मऊगंज में हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटना में कर्त्तव्य निर्वहन के दौरान एएसआई (एसएएफ) श्री गौतम की आकस्मिक मृत्यु अत्यंत कष्टप्रद है। उन्होंने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को स–ति देने व शोक संतप्त परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। डीआईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय ने भी श्री गौतम को श्रद्धांजलि दी।

उप मुख्यमंत्री अहमदाबाद में "मेगा ब्राम्हण बिजनेस समिट-4" में हुए शामिल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल अहमदाबाद में आयोजित "मेगा ब्राम्हण बिजनेस समिट-4" में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने समाज के प्रबुद्ध जनों से संवाद किया और ब्राम्हण समाज के आर्थिक, शैक्षणिक और व्यावसायिक उत्थान पर अपने विचार रखे। समिट में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय मंत्री श्री सी.आर. पाटिल, पूर्व राज्यपाल श्री कलराज मिश्र, पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री नितिन पटेल, राज्यसभा सांसद श्री मयंक नायक सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। तीन दिवसीय इस आयोजन में ब्राम्हण उद्योगपतियों के 300 से अधिक स्टॉल लगाए गए हैं, जहां व्यवसाय और स्टार्टअप को बढ़ावा देने की दिशा में मार्गदर्शन दिया जा रहा है। राज्य एवं केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी समाज तक पहुंचाने, नए उद्यमियों को प्रोत्साहित करने और बी2बी/बी2सी बैठकों के माध्यम से व्यापार को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं। समिट में समाज के प्रतिभाशाली व्यक्तियों को "ब्रह्म रत्न सम्मान" प्रदान किया गया। युवाओं के लिए रोजगार मेले का आयोजन किया गया, जिससे अधिक से अधिक युवक-युवतियों को रोजगार के अवसर मिल सकें। समिट में देशभर से 2 लाख से अधिक ब्राम्हण समाजजन की सहभागिता रही। इस दौरान धार्मिक अनुष्ठान, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सामूहिक विवाह मेलों का भी आयोजन किया गया।

पीएम इंटर्नशिप योजना में युवाओं के पंजीयन के लिए दो दिवसीय शिविर आज से

जिले के सभी महाविद्यालयों में लगाए जाएंगे शिविर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के सभी महाविद्यालयों में 17 और 18 मार्च को पीएम इंटर्नशिप योजना में युवाओं के पंजीयन के लिए शिविर लगाए जाएंगे। कलेक्टर कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने सभी शासकीय और अशासकीय महाविद्यालय सहित इंजीनियरिंग कॉलेज, पॉलिटेक्निक कॉलेज और आईटीआई के प्राचार्य अपने-अपने महाविद्यालयों में प्रातः 10 बजे से शाम 5 बजे तक पीएम इंटर्नशिप योजना में युवाओं के पंजीयन के लिए शिविर लगाने के निर्देश दिए हैं। शिविर के लिए महाविद्यालय अपने स्तर से कंप्यूटर सिस्टम आदि की व्यवस्था करते हुए नोडल अधिकारी नियुक्त करें। शिविर के बाद पंजीकृत आवेदकों की सूची संभागीय आईटीआई के प्राचार्य की मेल आईडी पर प्रेषित करें।

उल्लेखनीय है कि भारत सरकार द्वारा युवाओं को शीर्ष 500 कंपनियों में इंटर्नशिप एवं बेहतर मेंटरशिप दिलाने के उद्देश्य से पीएम इंटर्नशिप योजना शुरू की गयी है। इस योजना का वर्तमान में दूसरा चरण जारी है। योजना के तहत आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 मार्च निर्धारित की गयी है। ऐसे उम्मीदवार जिनकी आयु 21 से 24 वर्ष के बीच है तथा सीधे तौर पर सरकारी कर्मचारियों से संबंधित नहीं हैं और अन्य किसी आप्रेंटिसशिप योजना का लाभ नहीं लिया है वे इस योजना के लिए पात्र हैं। योजना के तहत हर माह 5 हजार रूपये इंटर्नशिप राशि एवं 6 हजार रूपये का ग्रांट भी दिया जायेगा। उम्मीदवार पीएम इंटर्नशिप डॉट एमसीए डॉट जीओव्ही डॉट इन के माध्यम से पंजीयन कर आवेदन कर सकते हैं।

प्रभारी मंत्री ने मऊगंज जिले की घटना के घायलों का जाना हालचाल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। गत दिवस मऊगंज जिले के गड़रा गांव में हुई घटना में घायल हुए प्रशासन एवं पुलिस के अधिकारियों का संजय गांधी अस्पताल में इलाज जारी है। मऊगंज जिले के प्रभारी मंत्री श्री लखन सिंह पटेल ने अस्पताल पहुंचकर घायलों से मुलाकात की तथा उनके स्वास्थ्य के विषय में डॉक्टरों से जानकारी प्राप्त की। प्रभारी मंत्री ने निर्देश दिए कि घायलों के इलाज की यथा योग्य समुचित व्यवस्था करें। इस अवसर पर प्रभारी मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव घटना पर बारीकी से नजर रखे हुए हैं तथा सतत संपर्क में हैं। यह बहुत ही दुखद घटना हुई है। शासन व प्रशासन स्तर पर स्थिति को सामान्य बनाने के सभी प्रयास किए गए हैं। इस दौरान विधायक मऊगंज श्री प्रदीप पटेल, जिला भाजपा अध्यक्ष डॉ राजेन्द्र मिश्रा, डीन मेडिकल कालेज डॉ सुनील अग्रवाल उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।